सतसुकितग्राहिअहलीग्रजअचितपु
रसम्मुनिहरकरनामैकवीरसूरतजोगसंत
रनायनीवर्महासचुरामननामकुलपति
नामप्रमोयगुरवालापीरकवलनामम्र
मोलनामाम्रुरतसनाहीमाहिवचीहया
वंसवलावीसचीहयासौलिलतश्रीजिय
अमरमूलायमहासोवचनासाचीाय
महासविनतीविरैासुनगुरकुपानियान
जरामरनहुवमेटकौाहीजैपहनिर्वानासा
वीामरनकालत्रैलोकमैाअमरनहीसै
कोइायहसंसग्राहिनिसिलगीाहीजैता
हिविगोइासोरपाहेप्रभुहीनहयालाज

गतजीवअतिदुखितहैं॥हरहुवेगाउरसा
लाक [illegible] पानंदहासकौंसतगुरोव
चना॥चौपाई॥धर्मदासविनतीनलकी
ना॥सोसबकथासुनहुपरवीना॥जराम
रनजरकोमिटिजाई॥रसनामगहौचि
तलाई॥अमरलोकवहीपावै॥अमर
सबहृदयमाहिसमावै॥ताकीमहिमाअ
वरनजानी॥अमरमूलमैंकहौबखानी
अमरमूलहैसबतेंसारा॥अमरमूलकौ
कौविचारा॥जिहितहंसाउतरैपारा॥अ
मरसबहंसा निजसारा॥सबकोअमर
मूलनिजअर्थ॥कबीरविचारि॥
अमरमूलजानैबिना॥बूडासबसंसार

॥चौपाई॥अमरमूलजानौयमहासा॥
ताकरनेहकहौंपरगासा॥अमरनामक
वीरकहाड़ा॥अधरविनवूडीहुनिआई
॥यमहासावचना॥यमहासविनतीअ
नुसारी॥अमरमूलप्रभुकहौविचारी॥
अमरनेहसाहिवकहिदीजै॥विवावुरा
इअमीरसपीजै॥वंहीघोरमुक्तकेहाता
अमरमूलकहियेविख्याता॥सत्यनेह
कहियेनिरवारी॥औरग्रंथहैवहुतअ
पारी॥भिन्नभिन्नसवमोहिवताई॥जि
हितेमनकीसंसयजाई॥प्रेमप्रीतितुम
हीसौलागी॥वचनसुवासुनिहौअनु
रागी॥अमर नामकवीरहैसारा॥पा

उंताहि होय निस्तारा॥ सतगुरु वचनां॥
तावसतगुरु हंसिक हैं विचारी॥ तुम सो
ण्पानाक अंग्रति नारी॥ प्रथम ही सकौ
पानकरलेया॥ तेहि पीछें नरियर पुनि
देवा॥ सवहु विदेह भयौ उ-रा॥ तेहि
पीछें जीवलोक पसारा॥ सवहु नाम जो
कहै माई निहअंघर मेरहै सभाई॥ नि
हअंघर [illegible] तलौके
पा [illegible] जीवतलोक वैठि पुनि जाइ
सारसवहु मेंहर हैसभाई॥ अमरसव
हकी [illegible] नारी॥ अंवूहीप पावै
ठा॥ अंवूहीपलोक करनाउ॥ सानाति
हिकी [illegible] हालमाउ॥ अवरनरूपवरन

नहीजाइ।।यर्मदासस्नियौचितलाइ।।
वोऽसमानहंसकोस्पा।।पुरसमहिमा
आहिअनूपा।।अमरसवहसोप्रानीम
यऊायोहीसवहसोलोकैगयऊापान
प्रवानसवहहैसारा।।ऐहीमूलसौंहंस
उवारा।।अकहनामअघरहैनाइ।।
तुमनिहअघररहौसमाई।।निहअघरको
करैनिवेरा।।कहैकवीरसोईजनमेरा।।यर्म
दासोवचना।।निहअघरगुरमोहिवुझाइ
जातेहंसलोककहजाइ।।लोकप्रतीतकरौ
मैकैसेंकहौविचारिचितावहुजैसेंतु
मप्रभुनिर्गुनजासिसुनावा।।अवकहि
यैमोहिनामप्रभावा।।संतगुरोवचनांम

धर्मदासतुमसतकेग्रंगारासारसवद
गहियौसुवसागराहंसासज्जनपर्मस
नेहीकहीयौताहिपरमपदतेहीधर्म
दाससोसिष्यतुह्मारासारसवदकोक
रैसह्मारातुम्हरेवंसकौयहउपदेसा
मूरखसोंनहीकहहीसंदेसासाखीमू
रखसोंनहीबोलिहैकहैकवीरविचारि
सरतवंतजहंसा हैगहैसवदटकसा
राचौपाईग्यानीहोयजेसतकेवीरातह
समायवस्तुगंभीरायर्मदाससुनियौचि
तलाईलोकपरचैग्रवदेउवताईनिर्ग
न सर्गुनकहैटरुईजातेसवसंसय
मिटिजाइनिर्गुननामनिरंजनसारा
सर्गुनसकलकीन्हविस्तारानिर्गुनस

ऊ्नबुद्धि कौं न्यारा॥ सारसब्द गहि उतरहि
पारा॥ अमरमूल को करै विचारा॥ यमर्म्म हा
ससोई सिष्य हमारा॥ और ग्रंथ बहुत कर्म भैगा
या॥ अमरमूल की है सब साखा॥ सा बापन
सबै लपिटाना॥ अमरमूल का हू नहीं जाना
अमरमूल यमर्म निलेहू॥ यह संदेस हंस न
कहै हू॥ यह संतन को मत है भाई॥ जो
वा गवन न साई॥ सोई जीव उतरि है पारा॥
तरबूडि मुवा संसारा॥ सा॥ ग्यानी होइ
मान हीबूझै सब हमारा॥ कहै कबीर सो
वाचि है॥ और सकल जमयारा॥ पौ
पवन भेद अवकहौ बुझाई॥ ता मैं जग
होअ हुझाई॥ नीर पवन को नाम उलेख

सुकृतघटमैंकरैविवेषा॥हमटकसारग
यइकनाषा॥नीरपवनताहीमोरषा॥पंही
माहिसवरहलिपिटाडा॥नीरप[illegible]
मुला॥सारसवदमैंहैंकीनानिवेरा॥नही
मानैजोजमकोचे॥गरभहिवासजन्म
सोवरई॥जोयहलेसैवाहिरपरई॥घती
सनीरपचासीपवना॥तासोरचीसिष्टज
गनवना॥यहतोभेदकोहीनाना॥नामर
मगुप्तहिहमकीन्हा॥नामभेदजोपाव
हिसाचा॥सोजीवकालसोवाचा॥सा
सारसवदजोजनिहै॥सेजैहैभवजीति॥

नामप्रचैत्रवहुनहीमर्कउमासहे
जोतकहिविचारालगनसोयकरवरीस
म्हारानामसारनाहिनचितहीन्हाल
गनमहूरतिसवगहिलीन्हायेहीमर्म
जवछुटवनाइासतगुरसवहगहैचित
लाइानामपानमैकहौविचारीजातेछु
टैमर्मकीवारीमोहनसैसतचौकीहो
ईातवहिनामकहपावैसोइघतातेपानप्र
वानाभावीभगतगुपानताकरहैसावी
विनानामनहीउतरैपारकैसेसायकहा
हैसारापढ़पढ़विद्यवेदपुरानाप्रेम
विनानहीहोयप्रवनाचारिगुरुसंसार
कीन्हातिनकेहाथमकहा

ते [illegible] लोकपछावैं॥ भवसागरमें
है वहुरि न आवै॥ साखी॥ चारगुरु संसार
मैं॥ छुटज न [illegible] द्वार॥ और गुरु जगमें
ही॥ लख चौरासी पार॥ साखी॥ चारगुरु संसा
रमैं यमहासव ऊंस॥ मुक्तराज मैं
महीनो उ॥ अटल वयलिसवंस॥ चौपाई
॥ यमहासत तुम मति कैयीर॥ ता तें ही न
मुक्तकरवीर॥ तुम तें जीव उतरिहै पार॥
ही नो सौंपि जगत कर मारा॥ रायवंकेज
[illegible] हतेजी गुरत हाविराज॥
ऐही छुडावै कलि हंस॥ सवहै व्यकारि
है निरसंस॥ वयमहासवयालिसवं

सांसेनिजुग्राहिपुरसकरग्रंसाइनकै
हसौंपिहीनजिवंमारासवजीवनकोकर
हिंउवाराइनैघोडिअंतहिचितलावौज
नमजनमसोंगटकावावौवंसवयालिस
तुम्हरेसारागौरसकलसवजुपासारा
सालीनामनेहजोजानईसोइवंसहमा
रानातरहुनियावहुतहौवुमुवसंसार
गचौपाईआयमंहासमेकहैविचारीजेहि
विधिनिवहैयहसंसारीकालकीनहैव
हुवटपारागजिनयहसिष्टकीनसंघारा
ताकैहकोइनजानैमाईकालहिसुमिरन
करैवनाईकालहुग्रहैसवहिरुवावै
सनहहोयतहामाथनवावौनामरेकै

गुप्तअमोला॥सोयर्मनिमैंतुमसोवो
ला॥जोयहनामकोकरैपसारा॥सोभव
सागरउतरैपारा॥तुमहिंदीनहसवहउ
पहसा॥सो ज्ञानसोकहौसहेसा॥ग्या
नपदारजाकेघटमांहीं॥जीवतमुक्तिपा
यजनसोई॥यमहासोवचनांयमहा
सकहेसुनहुसाह॥जीवनमुक्तिकहौ
समुझा॥जीवनमुक्तकहौकिमिजान
लोकवेसेपनिचानां॥सोयहमोस
नकहिवैमहा॥जिहिमनकोसंसयघे
हा॥सतगुरोवचनां॥कहैकबीरसुनोय
महासू॥यहनिजभेदकहौतुवपासू॥
उगरगुप्तानजाकेघटहोई॥मुक्तभेदक

हैं पावै सोई अब मैं कहौं ग्यान उपदे
सा तुम अपने घट करौ प्रवेसा अमु
क नाम नहिं संसय होई अमर नाम
जब सुरति समोई जहँ लगि कहिजिहै
करि गाया तहँ लगि कहिजान हु सोस
व माया अकह नाम नाहिं नकहिजा
ई घट घट व्यापि निरंतर अगाई नाद स
व्द जब ही उचारा ता मौ अघर भव
विस्तारा अघर हुते प्रगटी माया संस
य भइ सब निकी काया जब ही सुरति सब
द मन लाया मन थिर भयै न ही है मा
या अस्थिर मन घट्ल हरसमानी
मुक्त रूप तब ही पहिचानी सोनि ब्रह्मी

जीवहु मारा कर्म कीए छुटै पारा
जोयहु गहै सबद मन लाई ताकर ग्राव
गवन न सार्ई सीधै पढै काम न हीग्रावै
कामी जीव मुक्त न हीपावै [illegible]
जाहि घट हाइ पावं कपट डार सब [illegible]
जैसें सूरज वाहर स्या ग्रैसें मोह ग्रा
नकार न हा जव लग मोह न छुटै माइ
तव ला जा नाम न रहै सै माइ जव लग
मोह रहै [illegible] लगि न हीग्रा
नपरकासा जन्म न मुक्ति सं जोइ
तव [illegible] पावै सोई कोटि नज
मग [illegible] जव कीन ग्रमर मूल तव
हो पर चीन ग्रमर मूल को पावै भेद

कहैकबीरसोहंसअग्रहेद्धाधर्मदासे
वचनाधर्मदासविनतीअनुसारीप
सतगुरुवचनजावबलिहारीजिहिवि
धिममनहोइअग्रहेद्धासोसम्रथक
हिहीजैभेद्धाअौमोहिकहौपानपरवा
नाानरिअरभेदकहौसहिदानाकहै
तैभयोपानपरवानाकहतैभयोन
रियरउत्पानाासतगुरोवचनाअग्रम
रमूलसोपानबनायाबेलीबीजन
हीनिरमायाकहतोनबेलबीजतिहिका
झासबहहिमाहिबेलिनिरमाईाउप

र्वीना॥नरियरहैब्रह्माकोमाथा॥सो
यरहीनकयर्मकेहाथा॥जियकेवहसैन
रियरहीना॥हंसछुटायर्मसोलीना
नरियरमानसवहकीजोरी॥सारसवह
सोनरियरमोरी॥जिननरियरकोपाव
प्रसादा॥जन्मजन्मकेपापनसादा॥जे
जीवपापपानभिषाना॥देहछोडिसत
लोकपयाना॥कालहगातवहीमिटेज
ईसतलोकमहजाइसमाई॥ग्रैसीगति
जीवजोकरई॥मुक्तिविनासोनाहिनति
रई॥यर्महासोवचना॥मुक्तिप्रवानगुर
कहउवुझाई॥कवनमुक्तिसोजीवम

कहीं तुम प्रभु हौ हंस नके नायक पुरस
पुरान जीव हित लायक मानि अंग मोहि
हीन हुव ताई जाहि गहैं जियलोक हि जाई
सतगुरु वचन नाम भेद सुनु मगत वि
चारा जासों उतरि जाय भव पारा प्रथम
हि पान प्रवाना पावै सायन की सेवा मन
लावै सारसव्द घट रहै समोई अघर
भेद पाय जन कोई अमर वस्तु गुपित है म
रा गुप्त नी होय ताहि सों भाषा सव्द
पनि हम अघर जानै सो हंसा सतलोक समा
नै इत नाम प्रान जाहि घट होई अमर मूल
कहु जानै सोई नाम भेद सुवचन नाम भेद
सविनती अनुसारी हे सतगुरु तुम्हरी व

लिहारी॥नरियरपानप्रसादवतावा॥ताव
रनहनाहिहमपावा॥सो घोहमुहिहु
वताइ॥जिहितेमनसंसयमिटिजाइ॥सतगु
रुवचनायमहासतुमसुन रुजान
नरियरनेहपानपरवान॥यमराइज
वसेवालाई॥तवकीकथाकहौसमुझा
इ॥जवतुमसुनौयमकीआही॥तवमि
टिहैजमकीवकवाही॥सेवावस्यपुरस
जवमयऊ॥तीनिलोकनवसागरहिय
ऊ॥मानरोवरवेकहीन्हा॥कामिनि
देखिवहुतसुकीन्हा॥यमराइकामिनि
कोअसा॥तवहीरसआपपरगासा॥
तीनिलोकजियकरोआहा॥तऊनगरि

है उन्नत्म्हारा तीनिलोकमैं जियजोहो
यर्मराइकैंहम्प्रावैसोइ ताते वहलान
रियरहीनता छुटाइ यर्मसोलीनता म
जप्रवानकहउसमुझाइ विनानगति
नहीकालपराइ ना रियरपानसवहहै
नोका नगतप्रवानाकहउतहचोका
ाघहाग्यानपूरनहोइजाघटापाननरि
यरमगतहोघीनग्यानननेहपावैकै
तौपढकरसताग्रमरमूलहिगंथयर्मनि
सुबहिचितलगाइकौंजन्मजन्मनपापना
सैंग्रमरलोकहिजायकौंसोरछासुनय
र्मघससुजाना किहिंविधिसायकहावा
इाकहैकवीरवखानाग्रमरमूलजाने

ति ना ॥ ति श्रीग्रंथ भरतभूषण ग्रंथ श्रीविश्रा
मा ज्या नगरवर्णिनां ॥ ॥ ग्रंथ महासउ
वचनां चौपई ॥ ग्रंथ महासक हैं सुनउ
गुरसा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ मिसाइ ॥ न
मस्त्र मालतत्त्व प्रतिचारी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
जीव संचारी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ निसहिन
आपै ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ मस
तगुरु ग्रंथ वैंतारा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

सोअग्राहिनिनादाब्रह्मारूपसवमांहिस
माइासूधमरूपजीवहरसाईहसवं
नागरइकरजानाअातमरूपीहहस
मानाअौरजोइनिमैवरतैनाहीमान
सहहमुक्तपरनाहीपांचततहसईहो
संगाप्रकृतपचीसकहौप्रसंगायह
प्रवानमनकेरवकनाजीवब्रह्मासो
नवउतपानामनकरतायहहहसमा
नीसूधिमरूपनाहिपहिचानीअंक
चीनकअस्थिरहोयजाईताकोआवागव
नसाइताकोवरनमेहजवपावैमुक्त
होयजगवहुरिनआवैचौरासीकेवंधन
छुटैकालजंजालताहिनहीलुटैमुक्त

भेदका नहीं जाना मरनकालमैंसव
लपिटाना अमरमूलहैमुक्तपासार
जाकोसंतोकरौविचारा अंतमवंह्ला
पंकहैमाइ परमात [illegible] मिलिब्रह्मकहा
ईजिमिजलनि [illegible] छाड़ तिमि
कसानुचिनजिस [illegible] परमातमअंत
मअंतम [illegible] जिसं
चारा इमिजिवमयउब्रह्मनि [illegible] जि
मिवंचनअंतमनक्ता [illegible] ब्र
ह्मकरचीन्हा उमयअं [illegible] कपुटे
ब्रह्मजीवकरसंगन [illegible] जिमिरवजोति
कानूप [illegible] यहवंब्रह्मजीवहोयगा
इसमुक्तेतएकै [illegible] जाई सिवसकतीएकै

भक्तिपीनहाताकरमेहविरलेकोइचीन्ह
जिनजानातेमुक्तिसमाना॥प्रेमभावस
तगुरपहिचाना॥साखी॥जिनजानानिज
प्रेमकेहासोइजनपरवाना॥तासोंक
हियेसुमीरकहैकबीरखसाना॥चौपाइ॥
अमरमूलमाखिवनिजवानी॥समुझै
गेकोइविरलाग्यानी॥जिनवुझातिन
मनकहजाना॥मनजानेतेब्रह्मस
माना॥आतमजीवसबैमिलगयेहो
इवियामावनरकहिरहुआ॥जिमिकंच
नकेभूषननाना॥जवओटैतवएक
समाना॥इसरभावएकिकरजाना॥
भूषनकंचनमाहिसमाना॥कंचन

ब्रह्मा अमृत नजीडि इतना बीच जीव
और सीडि को कबीर सुन संत सुजाना
केवल तोय सुनाय उग्याना धर्म दास
उपदेश धर्म दास कहे सुनो गुरु साहब के
केवल ज्ञान [illegible] चढ़ा केवल
ज्ञान के [illegible] राज सुमिरता होय
जीव उबारा सीव [illegible] आ
इ केवल ज्ञान मोह सन [illegible] जा है
[illegible] जो वाल [illegible]
स हिजाना जहां बोलत [illegible]
हो [illegible] निहम्प्रधर वतलावहु मिटै सक

लसंदेहाहेहमाहिहरसावहाासतग्र
सहविहेहाचौपाहाासतगुरुवचनाक
हैकवीरसुनहुमतिआगराअघरहि
तसहकहौनागराानिहअघरहैकाया
माहीानिरखहुताहिपहहमकीछाहीं
पहहमीजीवहोयजोकोईकेवलज्ञानपा
इहैसोईकेवलज्ञानप्रगटसमुझर्ह्ह
निरनिरयकरितोहिलखाउ।प्रथमहिसुन
हुज्ञानकारनेहाानिरमोहीहोयहसम्यके
हाासुरतवतअघरपहिचानौाऔरसक
लजगमिथ्याजानौासुखदाईसवहीकौमा
वैाऔरसपहोयअग्निवुझावैासमद्र

नन हि आनै हिरदय पुनीत रहमन
होई पवंड नर्म ऽरस्तवथोई ब्रह्मवि
योग सतघ्रवुरागी इसहृदिसाहृमति
नलागी कुछ सकलजगदेखविलोकी
वुहवुहजिमिवलकैअ[illegible] समग्र
जाकर तयसुह केवलग्यानताहि
समग्र [illegible] वरतमो नहीआवै
[illegible] नहचेग्यावै यहविधिके
वल ग्यानका तवै जास्मिरतसतला
कासवादै वलनाम निरअघरआ
[illegible] निरअघरकोपरनिवरा [illegible] स
मा निहअघरकोपरनिवरा [illegible]

वीरसिष्यसोईमेरा॥अमरमूलमैंवर
निसुनाई॥जिहितें हंसालोकसिधाई॥स
हनेहजानैजनकोइ॥सारसहमहरहैस
मोई॥सहगयानुनिजलजिनिपावा॥स
महषीसवमोहिसमावा॥जोतिकजीवहे
हयारिआई॥सहहिसोतेसकलउपाई॥
नीरपवनकीउतपतिकहैकबीरविचारय
जोनिजसहसमाइहैसोइहंसहमारा॥चौ
पाइ॥सहअवंअरोरसवअंआ॥सारसह
गजैअलआ॥निहअधरकोपरचैपावै॥
सतलोकमहिजायासमावै॥वमहस
उपचना॥इहा॥विनतीकरैकरजोरिय

मनि सुजानसतगुरुसारे ॥ सतलोक
हि कवन सो नाम ॥ कवन विहिर हो
कवन रूप जो [illegible] ॥ कवन सुप्रह
साकेर ॥ कामिनी कि [illegible] ॥ तहा
[illegible] कविस्तरे ॥ सोरठा ॥ सो मोहि प्रगट सु
नाव ॥ [illegible] ॥ निजदासपै ॥ वारिवार व
लिजाउं ॥ अवजिन मोहि छिपावहु ॥ सत
गुरु वचन ॥ चौपाई ॥ कहै कबीर सुनहु धर्म
दास ॥ सतलोक का कहौं प्रकास ॥ सतलोक
महँ [illegible] रवरकाया ॥ एक रूप सब हीरन
का ॥ बाउस मानहु [illegible] का सो ना ॥ अमर चा
रु पहिरै मन लोकना ॥ [illegible] रस कतवरनी नहि
जा ॥ काँटि नदेखि [illegible] रामलजाई ॥ अमर

लोकअमरहैकाया॥अमरपुरसजहांअ
रहाया॥अमरपुरसकोपावैभेद॥कहैक
रसोहंसअछेद॥सतलोकसतसरूपसारा
सतनामहैहंसअयारा॥अमृतफलकेभो
जनकरहीजुगजुगकीछुधातहांहरहीं
पावतसुधानर्भमिटिजाइजन्मजन्मकीत्र
ग्रावुझाइकामिनिस्थवरनजिआरा॥जा
रनानकाजोतपासारा॥सोभावहुतकप्रान
पीयारी॥प्रेमभावसबहंसनिहारी॥अनहि
हितवचनबोलनहिवानी॥प्रेमभावअमृ
तरससानी॥सोभावहुततहांमनभावव
ना॥हंसकामिनीरंगवदावना॥अमृतनाम
हरहैमहलावै॥प्रेमभावपुरसमनभावै

आसावासामनकीनाही॥नयोप्रकाससद्द
केमाही॥वृक्षसंतउपाजनिहि होई॥सतउर
[illegible]
उ॥ज्ञानीसोइजुव[illegible]
मैतुमैंवुझावा॥सारसद्दकमेहवता॥
सारसद्दकापावैभेदा॥कहैकबीरसोहंसअ
घेदा॥सारसद्दनिहअघरआही॥गहै
मतिहिंसंसयनाही॥सारसद्दसोप्रवीपावै
॥सतलोकमहिजाइसमावै॥साखी॥कहै
कबीरविचारिकैसुनुसाधोसीख॥अ
मरमूलजुसद्दहताकरकरै॥प्रकासा॥चौ
पाई॥अमरमूलअभनमसंसारा॥विनाअ
मरदाहीहंसउवारा॥अमेहसबचनो॥

यर्महासकरजोरिनिहोरी॥स्वामीसुनयवि
नयइकमोरी॥कवनप्रसादहरसतुवपाया
कवनप्रसादअमरभईकाया॥कवनप्रस
हसायकहलावै॥कवनप्रसादहंसगातपा
वै॥कवनप्रसादतेसुरजनजानी॥सोस
मुझाइकहौमोहिवानी॥सतगुरुवचना
कहैकबीरसुनौयर्महासवयहभेद
कहौतुवपासा॥पुर्वजन्मतेहरसनपावा॥
संतसरनगहिसंतकहावा॥जवकोनोसत
गुरुनेह्या॥नामजानिअमरभइकाया॥
सेवाकोनेउहासकहाई॥लोकहिजायहंस
मुकतरो॥हेतुहापमहसुरजनजाना॥
कहैकबीरभेषनिरवाना॥[illegible]नाम

सोमाकहँलगकहौवषानी॥निहग्रहरजो
जानिहै॥सोइसंतसुजाना॥चौपाइ॥वक्षस
हदानमोहिसन्कहइ॥अमरमूलमहदेव
यौग्राव॥कोटिजन्मकोपातिकहोइ॥नामप्र
तापजायसवसोई॥नामहिगहैसूर्माजानी
॥विनानामसोकायरमानी॥नामविनास
वहाविधिहीना॥नामविनाहैग्यानविहीना
नामविनासोमूरखक्रूरै॥नामविनासापा
पालचूरै॥नामजानसोईगुनग्रहणर॥नाम
जानापहुचैसुखसागर॥दोहा॥नामग्रभाग्र
मालग्रविचला॥अंकवीरपावै॥तजिका
गचालमारालपंथग्रहै॥लोकसियाव
॥जिमिसहनहीपक्षकविनातम॥मिटत

नहीं अंधियारहोतिमिनामविनसुनु
दासयमीनानहीयघटबजियारहोसोर
णानामअमोलअपारअमरमूलभैव
रनेउाकरहिकर्मस्वजधाराकहैकवीरवि
चारिकौंजतआश्रमरमूलग्रंथनामलोक
महिमावरणिनोनामाकुतियोविश्रीमारा
यमदासोवचनांचौपाईविनतीरेक्ता
रैमैसोईजिहितेमनसंसयमिटिजाईआश्र
मरमूलकौकहौविचाराजातेहंसाउतर
हिपाराकवनभक्तिसोंहंसकहावाकि
यनैविधिसौपंथचलावासोमरजाहाहै
हुवताईगुमप्रभुहैसंतनसुखदाईसत
गुरोवचनांकहैकवीरसुनुयमनिबा

गरा॥ यह विधि हंस पछुचस्त्र सागर प्र
थम करै सतगुर दिढ़ा॥ जानि ऐ टैकालक
रमेवा॥ महाप्रसाद प्रेम सो पावै॥ सेवाक
रि निजु गुरहि मनावै॥ घट महिरावै परम
अनंदा॥ चौरासी के कटहि फंदा॥ गुरसाहि
व ऐकहि करजानै॥ सो [illegible] मा
नै॥ सायन सो ऐकहि मतरहई॥ छविया
गावन कवहूं करई॥ गुरसायू सेवजिनकी
नहा॥ ताकौ मुक्ति निकट भयदानहा॥ सा
धौ॥ गुरसंतन कंहजानि कै हरहै कुरौप्र
तीता॥ कबीर सो हंस होय॥ चलि है
वजलजीती॥ चौपाई॥ सतगुर जहाश्रा
रतीकर॥ सवतजत हांजाय पगुपर

हीआचरनाम्रतसायनकोलीजैआमुवपु
जकरिअचवनकाजैगुरकीदयानिरव
तरहईनिद्रारूपनकावहंकरईनिहअ
घरस्मिरैचितलाईजासोआवागवन
नसाइनिहअघरकौनिरवैभावाहिह
घोडिसतलोकसियावागुरकेवचनसा
वाकरभानानामविनाभिथ्याजगजाना
औरनहैजैऔरनपैवैनिसाहिनपलपल
नामविवेकौसाचो..कृपसारहैवजग
करनीहैवहायाएकनामकहंजानिकौ
तामहंरहैसमायाचौपाईकर्मभर्मकी
घोप्रहिआसाआरूनामसोकरविस्वासा

गर॥ यहविधिहंसपच्चस्वसागर॥ प्र
थमकरैसतगुरकीसेवा॥ जातेमिटैकालक
रमेवा॥ महाप्रसादप्रेमसोपावै॥ सेवाक
रिनिजगुरहिमनावै॥ घटमहिरावैपरम
सुदा॥ चौ॥ सीकघुटहिफदा॥ गुरसाहे
वएकहिकरजाने॥ सोहंसासतलोकसमा
नै॥ सायनसोरएकहिमतरहुई॥ छविया
गावनकवहूकर॥ गुरसायूसेवजिनकी
नहा॥ ताकौमुक्तानिकाहुदानहा॥ सा
खी॥ गुरसंतनकहैजानिकैहरहैकरोप्र
[illegible] कबीरसोहंसहोय॥ चलिहैग
वजलजीती॥ चौपाई॥ सतगुरजहाम्रा
रतीकर॥ सवतजितहांजायपगुयर

हीं।।चरनामृतसाधनकोलीजौ।।मुखपु
जकरिप्रचवनकाजौ।।गुरुकीहप्राभिरव
तरहईं।।जिह्नस्पनकवहंकारईं।।निहम्र
घरसुमिरैचितलाईं।।जासोआवागवन
नसाइ।।निहम्रघरकौंनिरवैमाया।।दह
घोड़िसतलोकसिधाया।।गुरुकेवचनसा
धाकरमाना।।नामबिनापियाजगजाना
औरनहैवैऔरनपैवौ।।जिसहिनपलफल
नामबिवेवौसाधा।।कृपसारहैवजग
करनीहैयवहाया।।एकनामकहजानिकौ
तामहंरहैसमाया।।चौपाई।।कर्मनमर्मकी
घोप्रहिआसा।।एकनामसोकरविस्वासा
कुलकाकाजाकर्मनसावौ।।ऐसीरहनीसा

यकहावै॥ यहविधसौंतुमपंथचलावौ
जब [illegible] पापन [illegible] वौ॥ वंसतुम्हरलो
कमहलाई॥ नामविनावूडीदुनियाई॥ ना
मजानसौ॥ वंसतुम्हार॥ विनानामस
संसारा॥ वेदनानामपारन [illegible]॥ नो
नो [illegible] [illegible]॥ [illegible] मकोपार
नपावै॥ पढिपढिपंडितनर्मलगावै॥ मुक्त
पंथनहीरतसभावा॥ पढिगुनथाकाप
रन [illegible]॥ [illegible] जमयेरैग्राइ॥ तव
वियाकछुकामनग्राई॥ विद्यापढिकान्हो
ग्रभिमान॥ [illegible] कनिद्ध
ना॥ वेदपुरानसाखयहभाषा॥ नामविना
कोजमसौ [illegible]॥ [illegible] तका

गया श्रीभागवतकाहिलीन्हा कामरूप
करसवहिसुनावा पंडितनासुमर्मन
हीपावा पुरनब्रह्मनहीचितहीन्हा
कामरूपसवहिनागहिलीन्हा विनस
तगुरकोईमर्मनपावै ऊंचहसवहा
लपिटावै सतपुरसकोमर्मनजाना
ऊंचहिव्यापसाचकारमाना ऊंचहिऊंच
रहालपिटाई सोचाअलमलमानहा
जाई अरहपुरानग्रंथवहुनावा ताम
हसिरैभागवतरावा ब्रह्मभक्तमक्ति
समझावै श्रीभागवतभगतदिढावै
ब्रह्मचारिसवकरहिवखाना कर्मम
र्मकाहुनहिजाना निर्गुनभगतिनाहि

सौंन्ना चितहीना सर्व भक्तिसव
ज्ञानहीन निर्गुन ब्रह्म मर्म नहि
जाना सिवसमविलगाइ ध्याना टि
स्त्र्यानकीन्ना मनमाहीं अलखनिरंज
जन ध्वी ह्वै देवतहा रूपगनमंज
मयउ निरंजनरूपविमद्ध गयउ ध्यै
तहेवकी उउत्पाना ध्यताम टकी
नेउ रजयानी देवनपरद्धावफ्कान
तातेविस्मसवैगहिलीन्ना गोपिनमिल
कररजपसारा लीलाय मगनचितयारा
तालीलामहसिमृलानी हाहिकास
ट सुरमनपाटी परानकथंत्रोजोति
दृढावै जोहिसरूपम मनहीपावै जो

तिसस्पानिरंजनराई जिनयहसकल
सिद्धारमाइासतपुरसकोमर्मनजाना
कृष्णानासवहीलपिटानासतपुरसस
तगुरसौपावैासतनामभौजाईसमावै
ासाबीकहैकबीरयमधासौअमर
मूलनिजजानाअमरसहजघटवसै
पावैपहनिरवानाचौपाइासतलोकम
हपावैवासाविनाअमरनहीकालवि
नासापहपरिमूरखग्यानविगरैग्यान
गम्यनहीकोइवचारैग्यानगम्यजोपुनि
होईासहबोजकरिहैजनसोअग्यानगम्य

वे ज्ञानविनासव- लगमावै सा
सतगुरुमिलसंसयनसै न तौपचि
पाच- नीन ब्रम्ह लोक- टनहीं कि
सविधेपा उतन चौपाई धर्मदास बु
ध धर्मदासकहै सुनहुगुरुसाहु ज्ञा
नसहसोकहुसमुझाइ ज्ञानरूपसत
पुरुषप्रकासा सतलोकम तीनोवा
सा कितहुविधिसमुझिपरैयहवानीक
[illegible] सानी [illegible]
चौ ज्ञानसरूप- [illegible] ही ज्ञा
नहिरूपकवीरलयाही ज्ञानप्रकासा
होयसमजाजो विना ज्ञानसंजूरुवस
[illegible] टमेंअग्रयियरा

ग्यानविनानहीहोइउज्यारा॥ग्यानस्वरूप
घरहैभाई॥ग्यानविनाग्रहरनहींपावैगा
ग्यानसरूपपुरसकरजानौ॥ऐहीवचन
सातिकरमानौ॥ग्यानस्वरूपनिहग्रहरखहि
यौग्रहरनेहग्यानसौलहियौ॥निहग्रह
रसौग्यानहिजानौ॥ग्रहरनिहग्रहरप
हिचानौ॥ग्यानसरूपुरसकरग्रंसा॥ग्या
नजानसोईभमवंसा॥विनाग्यानननहींव
सकहावै॥ग्यानहोयतवसरूहिपावै॥
सोइवंससतसरूसमाना॥सरूहीहुपा
थैनिजग्यानासाना॥कबीरविचा
रिकैसुनियौहोयभद्यसाजोयासरूहिपा

यहौ कारलोकानिवार ॥ चौपाई धर्मदा
स वचन ॥ विनयकीन्ह धर्मनिक जोरी ॥
होसमरथ विनती एकमोरी ॥ जेहितें वंससब
कहपावै ॥ सतलोकसतसिद्धसमावै ॥ ग्रौ
जीवनकहहेयदृढा ॥ जातेजीवमुक्तगति
पा ॥ झलतपदचच ॥ अमरसबकारकहा
विचारा ॥ धर्मदासतुमहंसहमारा ॥ आहिना
मअमोहितमाया ॥ सोइसबवंसकहराया
साठसमैवार चौपाई ॥ ऐहीतत्तहंसघर
जाई ॥ जपमालाकानेह पावै ॥ सत्यनामम
हिंजायसमावै ॥ ग्रैसोनेहनौधर्मदास ॥
जन्मजन्मकामेटतत्रास ॥ जन्मकर्मकीमेट
तफँसी ॥ यहनिजनेहहियेपरगासी ॥ सोइनै
हहमतुमसोनावा ॥ परहाअहरकन

रामीजिंनमग्र नेकपापमिटिजाई।सतलो
कमहवासापाई।धर्महीलौवचनाघ्ध
पदकजअंजनजानमनमयाफरहुमंजु
मनोहराजनमजनमनकर्मगतिजिमाना
मकल्पतरोवरामयकरहुआरतिविवि
यविषयामनविवासकलवुझावहाज
नमकर्मनलेयस्वामीमोहिसवहिचिन्ता
वहाल।।।।मैघटकरहुविचारायह
संसयमोहिव्यापहीनामतोरआयारा
हरहुवेगीत्रियतापकाहासतगुरुवचना
यमहासमैतोहिलखाउम्हरीसंसयस
वैनसाईआग्रमरमूलजानैजोकोईजा
कोजनमवहुरिनहीहोई।सतगुरुमिलै

तौसकल लावे ॥ [illegible] सब मेंहि वह
वै ॥ सतगुरु दृष्ट [illegible] ॥ अम
रहोइ नाम हि लौलीना ॥ संसय का भेक
है [illegible] ॥ [illegible] घट ज्ञ निसमा
ना ॥ जब ही रसय भेक को [illegible] तब
ही संसय उतपनि लाग [illegible] घर का
प चैपावै ॥ संसय [illegible] जा
वै ॥ संसय को [illegible] है ज्ञाना ॥ ज्ञान ही
न संसय लपिटाना ॥ संसय काल सब
नि कौ पाई ॥ निह संसय [illegible] नाम समाइ
संसय काल [illegible] ॥ [illegible] तेंगये
विगोइ विगोइ ॥ संसय नासे नौ धर्म
दासू ॥ एक नाम की रासौ ॥ नाम घट

अंतै मन आनै। संसय पकरता हि गहि
ता नै। नाम गहै ते हीनि रसंसा। नाम वि
नास वव्ड हंसा। सा जा। कहै कबीर य
म हास सो संसय को विस्यारा। एक नाम
कहु जानि कै। राउत रौ नव जल पारा। चौ
पाई। य म हास उव चना। है खामी संस
य उत पानी। ग्यान हीन सव हीजय जा
नी। विरला हंस होय अंकुरी। सो य ह
ग्यान गहै निज मूरी। ग्यान लहै विन मु
क्त न होई। तो य ह दुनिया गइ विगोई।
नाम महातम नाहिं सुनावा। विना
मकोइ पार न पावा। सतगुरु रोव चला। कह

इक्कहोतुवपार [illegible] प्रानहीन जोप्रानी
होई ताकर मद्दर नाउसोई ताको ही
जैपानप्रवाना नहिचहसहो निर
वाना जोपरतीतिहियेमैपर सोप्रा
नांभवसागरतर [illegible] पानवायसतग
वमावो सतगु चरनहियमैराखो
सतगुरुकरनि [illegible] चरनाच
तानिहचेयरहु तनमनधनसतनप
वारै सतगुरुचरनतरेमहुरै स
तनारीकामोहनलागै सवहिलागि
चरनचितपागै [illegible] इचरना
मृतलीजै सतलोकमहुमृतपा
जै [illegible] पुरवस्पकर

यहउपदेसानारीकौग्रवकहौंसदेस
नारीनामभुक्तिमहोईतापैघटम
हज्ञानविगोईसतगुरोवचनाताकर
तोहिमेहसमुझाउमनोकामिनास
कलमिटाईनारीतरहस्नौयमंदास्
कहैकबीरनामविश्वास्ज्ञानहीनब
रीकोस्पातकौग्रवमैकहौंसस्पात
नमनवचनसंतनपरवारौसंतनका
सेवाचितयारौसाधनसोजोग्रंतरकर
ईयमराइकेपंथापरईगुरकौचरन
निधीवरजाईतनमनवनसवहेईच
ढाईगुरकीसेवानिसहिनकरईसोति

रियामवसाण [illegible] ॥ ॥ ॥

सेहिवचनहमसंसयलीन्हा॥मैंनरस्व
पग्रहमतीहीना॥इहयमेहसुनिभयउ
भलीना॥तुमतौध्यावंतगुरस्वामी॥घ
मोग्रपरायजोग्रंतरजामी॥नारीनामभा
तजोकहियै॥इनहिजेहकैसेनिरवहियै
॥सुनियहसंसयघटमैवसीहजैवेणि
निवोरायमहासकावीनतीसुनियेवंही
घोराचौपाईसतगुरुवचन॥कहैकवी
रसुनौग्रमहासा॥यहसंसयउपजीतुव
पासा॥ग्रहिपुरसजवहतेग्रकेला॥सह
सरूपीपंचहुकेला॥तवसाहिवग्रेसीमि
तिकीन्हा॥सकलसिपुरचिवेचितचीन्हा

मनसाघटतमनमानिकारी उतपतिम
ईतहाइकनारी वोहीनारिसकटजाग
जाया मगकरासव नमरमाया म
तोरेकानारीकरनव पुत्रीपिता स्व
करतव होइव नीकोनाहीहारा
यमराइकोयहसंसारा संसयम
हमरिनजाइ मारिजारिसव जियावा
ई आपुहीपिताआपुहीपूता आपुही
देवआपुहीमूता आपुहीनारिरूपअव
वतरिया [illegible] जावन
आपुहारचैआपुविनसावन यमह
सतुवसंसयछुटा जनमजनमकरपा

तिकदृटा॥ग्यानीसोकहियैउपदेसा॥मू
रखसोंनहीकहवसदेसा॥संसयकान्ता
सकलजगभंगा॥काहूनचीन्होसंसय
भंगा॥साखी॥कहैकबीरसोपाचिहोगुर
चरननचितदीन्हा॥भ्रमरमूलनिजसब
हैहाहेसाचितगहिलीन्हा॥चौपाई॥धर्म
दासतुमकरौविचारा॥विनासबनहोउ
तरैपारा॥सारसब्दसोसबउपजावा॥ना
रीपुरुषहोवनिरमाया॥सूरजपुरुषचंदहै
नारी॥यहघटमैंइहरूपसवारी॥जेसंया
तकनिकक्तीस्वा॥साचेमाहीरूपभ्रमोक्ता
पापपुन्यहूपहिसोचावी॥कीन्हकर्मयह

हनमंत्रसाया॥ मंत्रप्रमलतव ॥मि
जाइ॥सत्तनामजवरहैसमा॥ जवलग
मंत्रप्रमलहैमा॥ तवलगनामवुज्ज
जाइ॥ [illegible] ॥ हुनाती॥स्
रनमंमकरैहिनराती॥ आ॥ नचीनैम
ठगवारा॥ मनहिचंचलसंसारा॥ यम
हासतुमनमंहिघोडो॥ निरमयहा ना
[illegible] ॥ जौ [illegible]
तौकसहसलाकफहजाहि॥ [illegible]
जप्तकोमारा॥ [illegible] हरचलेसंसारा॥
हाथत [illegible] जीवसवतारे [illegible]
हंसउवरैहैं तुमयमंनिपरवानाहै [illegible]

वहुवारि यमसनलेहा पारसनामकहो
उपदेसा ज्ञानीसोयहमहवसंदेसा छे
द्या ज्ञानीकहैयहभेदधर्मनिहेतुमसमु
झइकौरहनिगहनिविवेकवानीकहो
सकलवुझइकौनामपारसपरसहीघट
कागहोयमरालहोज्ञ्यमरलोकहिवासू
करतहानहीकालकरालहोसोरगाकर
लेआपुसमानाजगरंगीयहजीवकौ
हैकारनामनिसानाहपवरनसवपलरै
कौएलोआगमरमूलग्रंथनामसहिमाव
नंनितायोविग्रामाउयमहासोपचनां
चौपाइ ग्रंथमहसलीविनतीलाइ ग्रंथ

प्रतापहंसा मुक्ता [illegible] हंविविपल जि
यकीकाय॥सोसंमु[illegible] करवमोहिह
या॥ सतगुरत[illegible]अंतरजामी॥पारस
मेहुकाहु मोहिस्वामी॥सतगुरोप
[illegible]कहेकबीर॥ नसंतसुजाना॥पा
रसमेहवताव ज्यान॥पारसनामस
[illegible]॥पा
रस[illegible]जि॥जातहंस
[illegible]धीजै॥[illegible]न[illegible]प्रतात
सेवा॥यमहासलविवोव हमेवा॥ए
हारहनि[illegible]पंथ चलावौ॥जीववो
यिलोकाहंप चावो॥सोइविवअव

कहौ कुछ ई। जो मानै सो लोक सिधाई
पुरस सद्द नाहीं जिन जाना। निहचै हुई
है नर्क निदाना। बालक कहो वीरा नहीं प
यौ। कैसे फरि यह लोक सिधावै। जो हंसा
पारस न हो लेई। कैसे मुक्ति होइ परि तेइ
गुरु नहीं सिष कहै ज्ञान बतावा। यह हु
गुरु महि फिरयो बसमावा। सिष्य सो
गुरु जो अंतर दावा। गुरु मय जो बसत्य
मैं नावा। सिष्य सोइ जो गुरु मन भावै
गुरु द्रोह पुनि तब अनत न लावै। तुम सौ
नेह कहौ निरंता। निहचै वचन सुनौ
मतवंता। यम दास पंथ चलाया। यम दास वि

नतीप्रनुसारी है सतगुरु मैं [illegible] व
हारा हमरे वंस को [illegible] है [illegible]
जीवन [illegible] ले [illegible] जो [illegible]
सुनि लीजो वंस हमार प्रपन कहो
जै जिहि ते [illegible] सब केरा सो मो
हि ल्यामा को है [illegible] वरा [illegible]
जाको [illegible] है जगमा ही ते उवरहि
वंस न कोवा [illegible] वंस [illegible] जगा [illegible]
हो [illegible] सो पार सलेसव को [illegible] परस
मा [illegible] जो कर है [illegible] वार सो कि
[illegible] वालक वोटे पंथ चलावे
विना पं [illegible] है पावे वालक तरैवं

सकेसाथा॥पंथहानकमैतिनकेहाथा
मृतजानिकरराखागोड़ा॥तहिसमझौह
औरऔरनहीकोई॥सबजानिकरपंथच
लावै॥इसहेसफिरिसबसमझावै॥जो
नहिसबगनइकराई॥सुरतवतहंसनस
मुझाई॥पूरसअगप्राजोमोहिहीन्हा॥मू
लनेहसोसबकहिहीन्हा॥सारसबकोबे
हजोपाया॥वहसबगप्रानतोहिसमुझा
या॥विनानामभिरिहैनहीसंसा॥नामजा
नसोहमरोवंसा॥साखीकहैकबीरवि
चारिकै॥निहअघरकोनेहानिहअघर
जोपाइहै॥सोइहसअघहाचौपाइ॥अ
घरनेहवसैजिहिअगा॥निसवासारहम

ताकसंगारासतलोकमहिवा [illegible] मत
तभोजनकरअघड़ा धर्मदासउवच
धर्मदासविनयकरजोरी स्वामीसुनि
यविनतीमोरी नारीनामनकिंपानी
सोगुरकौकिपि [illegible] नर्क
नारीहिनाकहियो सोईनर्कगुरकैसेंचहि
यौगुरतौब्रह्मस्वप्न [illegible] मजाना नर्कभुगत
सोकवनौपाना गुरकीमहिमाअगाम
बताई निहचैफलहोयगुरहीनता गुरकी
वचनमान [illegible] मो
हिवताब्रह्मगुरअगमअपार धर्मदा
सकीवीनतीसुनिधौहोकरता [illegible]
कहैकबीरसुनोधर्मदासू [illegible]
एकहौतुवपासू हमजानीतुवसंसा [illegible]

ताकसंगारसत्तलोकनिवासापद ॥ अमृत
तभोजनकरैअघईयमहिमाउपजा ॥
यमहासविनयकरजोरा ॥ ध्यानीमुनि
यहिव तीमोरी ॥ नारीनामठाकीवानां ॥
सोगुरकौकिमिहीजियप्राणी ॥ सफलनार्फी
नारीलिया ॥ लियेसोई नर्फगुरकौसेंचाह
यैगुरतोवहमस्यहमजाना ॥ नर्फमुगत
सोकवनोपाना ॥ गुरकीमहिमाप्रागम
ताहि ॥ लिहचेपंछाहिगुरहीन ॥ गुरका
वचनमानहमलीना ॥ सोप्रवमो
हिवतावहतुमगुरप्रगटपार ॥ यमहा
सक ॥ जिवतीसुनिहोकरतार ॥
कहेकवारसोइ ॥ अवयहने
हैकहौतुवपासू ॥ हमजानौं वसंसयछ

टा।कालकाछिनभवतुमकहल्टाकाल
कोरिगततुमनहीजाना॥फ्रीमाया॥महे
पिटाना॥जवजानौनिजवंछसस्पा॥ता
कैनहीरंकऔभूपा॥नामत्रमलरसचा
कैत्रंका॥तकोकहानरकाकासंका॥तुम
कैहजीवबुद्धिनहीछुटा॥तातेजमरपि
रिलूटा॥यमराइकीगतिनहीजानी॥हरिमं
हिलउपजायोग्रानी॥यहवाजीमहिजीव
मुलाना॥सिवसमाचिलगावहियाना॥
विलास्पकाहूनहिजाना॥सुरमुनियावु
ऐत्रभिमाना॥ऐहोवचनमहसवजंगवं
या॥फ्रीमायासावजगफंद॥फंदकाते

सतुवंसउजागरा हंसनपुहुचावस्तु
वसागरा निहचेंहोइमुक्तपरवनाम
तलोकक्कहेयपवनाम वंसतुम्हारज
हांलगहोई तिनकेहथमुक्तसवलोइ
वंसवयालिसग्रंचलतुम्हारा तिनकेह
थमुक्तसंसारा त्यालिसमाहिसहसह
सनावा ग्रंसहमारहोइनिजसाचा ना
मजानतौसवेउवारा विनानामवुडा
संसारा नामजानसोईवंसकहावौतु
मविननामभुक्तनहीपावौ वंसतुम्हा
रनामजवपावै नवसागरतोलोकासि
याई नामनैजानकरेहंकारा सोजिव

परिहैभवजलपारा नामजानसोईपं
पसहमारा विनानामवुडाहंसारा
विनानामसवहीअभिमाना नामप्र
चैकोईकोइजाना अमरमूलमहहमै
आई निहअघरभैकहिसमुझई नि
हअघरकोपावैभेद सोइहंसाहोई
अघेहा निहअघरतुमग्यानसुनाव
हु जवुहापहेसमुझावहु अैसीयर
नयरैजोकोई निह चैपारपावहेसोई
तुमयमदासपंथकेराजा तुमरेहाथ
जीवकोकाजा एहीमहातमतुमकह
हीना जीवछुडावकालसोलीना

छंदा। येहि महि माजी वयरि हैं वासकरि स
तलोक मौ काल फंदा कारि कैलेयरौ। हं
सनथो कमौं सु मनसि ज्ञावासलीनो
असन अमृत पावही। वसन अम्बर पह
रि कैं तन जरा मरन नासावही। सोरठा। सो
ऊ सनान प्रवाना। धर्म निमहि मांहें सकी
पायो सद्प्रवना। अजूलोक वासा कियो।
। छंद। अनंत मूल पनथा। मूल माहि मावल
। चौपाई। धर्मदास तव विनती कीना। अ
वलगी साहिब मैं नहिं चीना। जवते दाया
गई तुम्हारी। गयो प्रकास हरदे महि

मारी अमरलोक के हौ उरवासी का
रन कवन आय अविनासी ॥ तब उरोय
चला धर्मजिह्न औ वचन चितुलाई ॥
जीवन नाकाज पुरस पठवाई ॥ सतलोक
तेज गमैं आवा ॥ धर्मराइ मोहि देव नाय
वा ॥ धर्मराय तव पूछी वाता ॥ कवन का
जतुम आय उ ता ता ॥ सतलोक मैं आव
मैं जाई उ ॥ हंस नकाज पुरस पठवाउ ॥ धर्म
राय तव बोले वीना ॥ हम रे हंस मुक्त तुम
हीना ॥ तैं तो जिव लोक कर राजा ॥ तुम
कस कर व जीव कर काजा ॥ यह तो लोक
पुरस मोहि दीन्हा ॥ तुम कस मोहि छुड़ा

वेलीन्हा॥ अब हम भल है जाउ गुसाईं॥
जीव जंत मारौ सब बाई॥ अगम अपारा
निरंजन देवा॥ तुम न हौ जानत मेरौ भेव
कि हि विधि सहस अठारह पारा॥ करन
नेह लैकर रोपा सारा॥ तब हम का हासु नो
धर्म राजा॥ जानत नाहिं मर्म तुम काजा
हम बल ऐसा सब का नाई॥ ताहि केवल
हंसा मुकताई॥ जहां नाम तहां तुम नहीं
कोई॥ बिना नाम हैं तुम्हरी होई॥ अहवि
धि होइ हंस परवाना॥ अवागवन ना सब
भिजाना॥ [illegible] जोति कन

मार [illegible] धर्मकरैसंसारा सो
सबमोर आहिबिचहारा [illegible]
[illegible]
कौनेनामहंसमुक्तावौ सोस्वामीमे
हिमेहवतावौ [illegible] नाम
हमारेपुरसकेरा वोहीनामसोहंसउ
वेरा धर्मरायत [illegible] ताहिबजाना अपने
औगुन भयेविगाना इहैनाम अपनेघ
[illegible] प्रमपुरखहैमोरोनाऊ दूसर
पुरखकहौनिरभाऊ मोरेआगेकवनकं
हावा सबकहैमारिजारिनरभावा ती

निलोकमेंहजीवपसादा॥उनकंहमा
करौसवछरा॥ब्रह्मापुत्रहमारोनयर
अंतकालताहिहुवहुवर्ड॥सिवसमा
कीन्होहंकारा॥प्रलैकालकारिहौजर
धारा॥विस्नवऐसवहीमैअंसा॥तिन
कैंहमारिकरौनिरवंसा॥आपनअंसय
हैणातिहेहा॥सिष्टसंयारप्रलैकरलेहा॥
तुमतौहौजगवस्मौंग्यानविचनांयर्म
रायकंहतवसमुरुहाई॥तुमजीवनकें
हुष्टकहाई॥जवतुमकीन्हतचोरकोकाजा
तातेपुरसमोहिउपराजा॥नामरूपमोहि
दीन्हप्रमोला॥इहानामजिवंहावो

ला॥ ठाकुर नामतु म्हारो होई॥ तीनि लो
क ठकुराइ सोई॥ पुरस नामतु म्हहीं न विस
रौ॥ आपु हो॥ रस रूप विस्थारी॥ जोग संता
यन हम रो नाउ॥ तोहि कारन मोकहु निर
माउ॥ तुम जिनि यम करौ हंकार॥ आदि
ब्रह्म हंस नरवारा॥ यर्म राय तव उतरद्यो
ना॥ हम कैं हैं द्या पुरस नैकानहा॥ तुम ही
द्या करौ मोपाही॥ जामैं मोर रहै जग चाह
तुम जे ठहमल तुरवाई॥ तुम हि परतुम
को पक [illegible] तुम को जाउ
आपने मन तुम हु सरवाना॥ कहै विचा
रि सो॥ उपदेसा॥ जामैं उजर रहै इन देसा

पुरसवचनहमसिरपरमानी॥अग्याम
गकरौनहीग्यानी॥ग्यानीवचनां॥जोग
संतायनवोलैलीन्ता॥यहउपदेसपुर
सतोहिदान्ता॥जोजियपानप्रवानापा
वै॥ताकेनिकटहुतनहीजावै॥जोकोई
जीवहोइअग्यानी॥ताकातुमकीजोमा
हिमानी॥सारसवजोवाएलकपावै॥ता
सोप्रेमवहुततुमलावै॥यहउपदेस
हमारौलीजै॥तवनिसंसयराजकरी
जै॥जोइतनीनाहिकरौकवुला॥तौतुम
सहिहौदुखवहुसूला॥कन्याग्रासकी
कातुमजाई॥तातेयर्मभयेअन्याई

रसपाहितव मारिपावा॥तव मैंचयत
हंसरसवारा॥सदवारितव रसमम
रीत॥ रेहारेहरतनटारा॥मूलसदवे
पावेनेह॥सो हंसाहि अ हा॥ह
रसहंसगति पावै॥ पाहपोलअ
मरघरजावे॥सो घघ्रमनाहिनपा
प॥कितनासेवापारिपुतरावा॥ म
कुयरओगुनव कीनचा॥ रसअगपा
पेलिजहाचातवसेंत रामिलपस
रा॥राजपसारेउय कंसार॥हमकह
ह्याहंसकाआई॥ हो॥ पुयानलोकते
ना॥वचनहमा मानकारलीजे॥

बहुतपहंसाग्रानि ॥ टारे ॥ चारसिद्ध
परवतपरपारोतिनसो मेहज्ञानसन
रे ॥ चारोसिद्धकालसोवाचा ॥ बिबीज्ञा
नहरहेमहंसांचा ॥ तापाछेंतमरेटिग
ग्रावा ॥ यर्महासतुमहरसनपावा ॥ यर्नि
हालोपचर्ना ॥ यर्महासविनताग्रन सा
सतगुरसाहिवतुवलिहारी ॥ ग्रगम
ज्ञाना ॥ माहिलषाया ॥ हर ज्ञानप्रान
तुमभाहिजुडाव ॥ ॥ चाग्रसतगुरप
गाडवार ॥ ग्रवभवजीवनसुफल ॥ मा
रा ॥ एकवचनमोहिकहोवुझा ॥ जिहतो
जियकीसंसयजा ॥ कालकाठिनसोमा

नजाना॥सोमोसोकहियोपरवाना॥जोपै
तकाल चीन्हजवपावौ॥तवतुम्हारेस
तलोकसियावौ॥जोपैकाल चीन्हनाहि
जाई॥तौकैसेंसतलोकसियाइ॥तुमतो
ग्यानवहुतउपदेसा॥बिनदेखेसवलगैंग्रे
देसा॥इयाकरौग्रपनोजनजानी॥काल
चीन्हपाउपहिचानी॥बिनचीन्हेंनाहि
होयउवारा॥भावसागरवाकी हेयारा॥भ
लक्कठिन हैजमकोफंदा॥किहिविधिजी
वहोयनिरद्वंद॥निरद्वंदीमोहिकरहुग
साईतौमैपंथचलाऊँजाई॥सतगुरुराव
चन॥तवसाहिबकहियेग्रनुसारा॥

मंदासर नकालपसारा॥ काल लस
सैहैजाइ॥ प्रथमकाल [illegible]॥ आ
जेतिकपामकोरेससार॥ सोसव [illegible] हका
लविवहारा॥ कालव्यालजानलहीकोइ
करविपरितसवानकहवो॥ इसश्रोता
रकालनंघलिया॥ काल [illegible] परवलस
वकहहलिया॥ [illegible]॥ मदाक [illegible] वारहि
पुनिपरसरामवलवी॥ हलावोयनह
कलंक [illegible]॥ इसश्रोतारसायांरी॥ [illegible]
इनहहहयरिजामा [illegible]॥ कालअमल
[illegible] पतलनपाहीं॥ कालमरमकाहुनहो
जाव॥ सवकहपकारकोनपिसिमाना
काल [illegible] रवकहकाहुनजीना॥ कालस्प

सवहिनगहिलीन्हा।कालपायकरजा
गहिजोगी।कालकवसुनिफिरहिविरो
गी।कालपायपापीजोकरहीकालपा
यसवपुनहियरहीकालपायकोसत
जुगभयउ।कालपायत्रेताहुइगयउ
द्वापरकालपायकरआवा।कलजुगका
लसवहिगरमावा।कलहिरीतचला
सवजाई।कालमहिसंसारसमाई।का
लपायकैवैंभगतकरावै।कालपायक
रलोकहिआवै।कालभेदभैकहौविचा
री।यभेदासतुभगवानसहारी।काल
कोरकोईमर्मनजाना।सतपुरसतेभय
उतपाना।अलखाहिरंजननामकहा

या॥ पुरसप्रसंगस्वपवानिआया॥ पुर्स
तवाहुंजप्त कृणर्कर्ता॥ कालस्वप्न म
नक्कर॥ ॥ ॥ कालकालस
ईकहेकालनकी॥ विचार॥ मनथिर
होवैसहमैकालरे॥ ॥ ॥
॥ नाकहुआवैनाक॥ ॥ सहहिमा
हीसहजसमाइ॥ जैसालवैतस॥ सो
ईग॥ प्रतप्रगटहुरैसमा॥ ॥ ॥
नाइकरप्रानजास॥ ॥ जैसाहैतसाहु
जाईगिर॥ ज्यानजवपरगटभयउ॥
॥ ॥ ॥

चनीचसवहरिवहायौ॥ऊचनीचस
वकृहिलागौ॥जवग्रातमपरमातम
पागौ॥सवसंसारवकृसाचसंसारसमा
नाकृहैभाई॥समतीग्यानप्रकासकरा
ईकृहैसाचसंसारसमाना॥सतस
दनाहिनपहिचाना॥ग्यानप्रकासहरहै
जवभयउ॥सौचकृहौनौभिटिगयउ
धर्महासतभयुकृउग्यानाकालमर्म
ग्रवसुनियौकाना॥सतगुरदयजाहि
परहोई॥ग्रमरमूलकाहजानैसोई॥ग्र
मरमूलजोजानैभाई॥ताकौकालसवै
भिटिजाइ॥धर्महासमैतुमहिलभाई

नेहुम्रघरकौमेहवाउ॥ न जाने
नेहुम्रघरमेह॥ ताकहेकालकरै
हुमेहा॥ निहुम्रघर रावनकालनजी
तै॥ ज्यहाठ॥ तीजरेवा॥ ज्यत
पिस्याकालपसासा॥ हान॥ मकारहस
सारा॥ कालगातीसंसौ॥ जाइ॥ दिरले
जनकाइलाविप॥ जीवकुंधसोना
हीचीन्ह॥ कालनचीन्हहिमतिकेहीना
काहुहुमकाहुसुमहो॥ कालकलाजा
नतनहिको॥ जवय॥ मनकोकरेवि
चारा॥ दिरले मह्यप्रभुहिपुकारा
खारथरूपसहाचितलावै॥ परमारथ
कवहुनहिमावै॥ कव॥ कहेप्रभुने

सवकीनाकवहुकहैसवमोरअयी
गासाकहैकवीरयमहासोतु
मतुमसुनियोचितलाइकालमेहनही
जानईमूरखरहेमुलाईचौपाईयमह
सतुमचितथिरतकरहामनकाडगमग
सवपरहरहाहूतमविम्योरवर्तमान
मनथिरनयोसवैपहिचानासवमहि
हंसानिरवहियोमनवचकर्मनाम
कोगाहियोमनकेस्वसमानीमायाग
सवसंसारव्यापयहघायामनथिरक
रपरमातमजानायहविवतत्तलेहि
पहिचानासोईहूतसोइवतमाना

साईं भवसागर पहिचाना ॥ कालकाल
सेते यह टोकलविचारि ताहिना चु
टोय कोहयमनिसुनिलीजो ॥ सत्य मा
हिवासातु मक्कीजो ॥ कालज्ञानसंसारव
खाना ॥ कालसरूपनाहि पहिचाना ॥ व
र्महसउपचनां धर्महासतवपावनप
रई ॥ सतगुरसोविनतीअहुसरई ॥ जोतु
कहीसो परवाना ॥ हमसोकिहिविधिहै
आना ॥ तुमप्रसादमुक्तफलपाया ॥ य
हभवसागरवहुरिनआया ॥ हमसोकहिये
वचनविलोई ॥ ज्ञानसायनाजायोहोई ॥
सतगुरोविचना ॥ तब साहिबअसकाहये
लीन्हा ॥ मंतोपावज्ञानकरचान्हा ॥ ह

मतु मसतलोकके वासी॥ काल न हीज
होहैं अविनासी॥ सतलोक मंहि व सवि
वहारा॥ काल वस्य सव हीं अवतारा॥
काल मर्म का हू नहिं जाना॥ जीव जंत स
व काल समाना॥ काल हि कला सिष्टि नि
रमाई॥ फिरि वह काल हि मांहि समाइ॥ स
र्व॥ काल स्वरूप सव उपजे काल स्वरूप सव
आया॥ कहै कवीर्य मंद्यास सो सव घट
काल समाया॥ व मंहि व उव चरा॥ चौ
पाइ॥ यह सुनि व मंद्यास हरिवानो॥ सत
गुरु स्वरूप हिये पहिचानो॥ तुम साहिव मो
हि की नहिं निहाला॥ आपन जानि की नहप्र
ति पाला॥ विनती एक करत सकाऊ॥ ऐस

तउ रमोहि नाघि सुनाउ ॥ काल हकीक
ति कहि समुझाव ॥ अचिरज वात मोरि म
न भावा ॥ प्रथम ८ रस कै प्रथ ॥ काला
मोहि वताव हु नहरसला ॥ सतगुरु वच
न ॥ तव सतगुरु कहि वेअ० सारा ॥ यर्म
दास ८ नाम ताहु मारा ॥ प्रथम हि तो जव
सुन्न ८ ॥ ता हि नन ॥ पापअ्रो पुन्न
सुन्न हि माहि सव ॥ ३ ॥ रा ॥ यर्म राय कोम
यौ पसारा ॥ पुरस स ८ सून्न निरमाउ ॥ सहि
नेह विरले जन पाउ ॥ जा का कहिये सुन्य
सुन्न ॥ काल ८ ॥ ए काल वाउ ॥ का
ल ८ ह कोई नहि जान ॥ यर्म दास तुम सु
नियो ग्यानी ॥ प्रथम ॥ जह ८ पर्क मय

औसत्तरजुणसोवत चलिगयउ।साहिब
मोहिकहुग्रग्राद्यानाजिंहजावकंहु
तुमनाहिचीन्हाजिंहजीवकंहुग्रान
बुलाईसत्तरजुगउनसोइगवाईतव
हुमजाइवचनग्रसवोलासोवतजिं
हनहीचितडोलाजागनहीलगिनीह
सोहाईकहसोवत तोहिपुरसबुलाई
तवसाहिवस्वकसहपुकारकालकाल
करकीनाउचारकालसहसुनिजिंह
उराना।तवगहिग्राईचरनलपिटाना
कालनामसुनग्रेसाभाईकालसहसु

[illegible] तब कहै [illegible] कालपुरुष [illegible]
वडअहई सायन मिलिकर मजकमा
दै [illegible] ही आवै कालपु
रुष नाहोतो माई तौ कहै कौ मगतिकरा
कालपुरुषपसाद पसाद [illegible] पांच
कालडरवंया कालहिडरगावै सतगुरु
कालहिडरघोडै अनमाना सतगुरुवच
नकालडरकहई कालहिडरजुठैपरहर
ई अैसाडरहै कालहिकेरा यमहास
तुमकारहुनेवेरा यहडरसोसव नि
यावडी का नहेवकरलकोमूडा त
मयमहासानडर जाउ कालहिका
हैजुठसुगाइ [illegible] यहहुवहा

ईातुमनिरसंकहुइपंथचलाई॥घट॥
यहनातिपंथचलायनगमै॥हंसलोक
पठाइयौ॥ग्यानागम्पलमायकैफिरि
सारसबदलमायौ॥ह्याजापरहोई
गुरकीरहनगहनिसमायहो॥काल
कसनिवारिकैसोइ॥पुरसलोकसियाव
हो॥सार॥ग्रापसरीमाजाना॥ताकौस
बदलमाइयौ॥धर्मदासलेहुमनि॥यहै
सिवापनपुरसकौ॥इतिश्रीग्रन्थरत्नल
ग्रंथधर्मरायवाहकालकोवदनना॥प
धर्मदासवचनांचौपाइ॥धर्मदास
ग्रानहंसमाना॥विगसउकमलउह्य
जनुभाना॥यहतनातिकैविनतीकी

न्हौं मनवचक्रम चरन चितहीन गा
पहरजलियेनिसामिटिजा [illegible] छीसी
स्वातिजमेपाई रंक [illegible] नियमिलि
ग जैसे [illegible] सैंच नम्रम्रतविषियसोलीन गुरु
चरननकौमैंग्रायीना [illegible] न
[illegible] प्रथमनमानेछत्रउप
देसा [illegible] वपरतातिमो [illegible] जयग्राइ नि
[illegible] त वसाइ अवहाजा
यलोकमे देवा [illegible] गम्यसोपरेउ
लेम [illegible] मजाना
ह्या तुम्हारपरापहिचाना जाप ह्या
तुम्हारीहोइ असपहकेंहेपहु चैसुनि

सोई॥हम जौनो कैमनउपदेसा॥विन
सतगुरु न होभिटतग्रहेसा॥तुम सतगु
रु ग्रौरसवसिखा॥यहोग्यानहमपर
गटहेसा॥सतगुरु ग्रापग्रौरसवग्रंसा
सत्तपुरसकेतुमनिजवंसा॥तुम्ह
रेवचनलोकहमजाना॥तुम्हरीदया
सवहिपहिचाना॥यहमनवुजसद
हैलोका॥ग्यानभयेसवमिटिगयेसो
का॥लोकग्रलोकएकैकरिजाना॥तु
म्होवचनसाचहमभाना॥ग्रवमो
रेजियपरचैग्राई॥नावुडोनाहिनउ
तराई॥सारसद्धमैरहोसमाई॥विन
जानेवुडीहुनियाई॥ग्रवएकवचन

वुझमैसाई विनतीकरौचरनचितला
ई तुमगुरहोहुमोहिउपदेसा मैंहु
नसौकहौसैंहेसा यहतौवातकहीव
[illegible] माई ज
व [illegible] हयाकरहिवमाहीं तव दीपा
वनामकाहीं ही कि यैवचनमोर
[illegible] गावैजाते सलोकहुग्रावै
[illegible] तवसाहिवग्र
कहिवेलीनहु सवकहे सदकोच
नहु [illegible] सदसाहिवानी सो
कसकरहिलोकपहिचानी सवक
हैग्र नगम्यकरहु सदलवाइग्र

पनकरलेहु॥प्रथमहिहैहुपनपरवा
तापीछेंफिरिग्यानवखानी॥समयजा
सवकहउविचारी॥ऐहीभांतिजीवनिर
री॥सायनकासेवाचितलावै॥सोजीव
नोसागरनहीआवै॥गुरकीछ्याभानि
सिरलीन्हा॥भावसहितपुजातिनकी
न्हा॥इतनोभेदएकनहिजानी॥सोकै
सैपुनिसिष्यवखानी॥ग्यानवंतकहुय
हउपदेसा॥मूरखसोनहिकहउसदेस
सारसहजाकेघटहोई॥तिहिसमहंस
औरनहीकोई॥धर्मदासतुमकोनहीं
मारा॥सवकोतारनहैकरतारा॥यह

उपदेसपहुव ॥ नाती ॥ मानौसोइहं
[illegible] ॥ हिमानेपहा[illegible]रा ॥ सो
चलिजैहैजमकेद्वारा ॥ जमकहाअपरे
जाव ॥ पहताजावथाहनहीपा ॥ [illegible]
कहकवीरवमंघससो ॥ हिजौपाव[illegible]
ना ॥ एहीहंसजुपावहीपहुचैपहनिर्वा[illegible]
[illegible] ॥ हेस्वामीतुम्ह
रीलिहारी ॥ अवचौकाकोकैविचार
कवनसद्दतेंआरातसाजा ॥ कोन[illegible]
[illegible] ॥ कवनसहसोनेदियरो
रा ॥ कोनस[illegible]संतिनुकातोरा ॥ कवनस
सोचौकाकै ॥ कवनसद्दसोहीपका

वरई॥ कवनैसद्दपानलिमिट्टीन॥ कवनसद्दप्रसादजुलीन॥ कवनसद्द
मिष्टान चढावा॥ कवनसद्द तेंछ नत
नावा॥ कवनसद्द परवाईसाजा॥ यो
ती कवनैसद्द विराजा॥ कवनसद्द सेंचे
दनहीजौ॥ कवनसद्द सोंपुहुप चढीजौ॥
दलप्रसादकिंहिंसद्द वनाई॥ वहैमेहु
रक्हौ पुजाइ॥ सातपुरोव चलाई॥ हैमे
हस्तवतोहिवताई॥ चौकाकथासकल
समुझाई॥ प्रथमहीतौ चौकाअनुसारा
सोईसद्दमैकहौपसारा॥ सेतासिंगासन
चौकाचारी॥ कंचनथाहप्रगप्रारतीवारी

तहांयनाजोवैठ्या [illegible] लवनीलिजि
भातिवनाइ [illegible] यमहासउ[illegible]
न ॥ चंदसूरहोउसाखीहीन [illegible]
नघटमा[illegible]सभावा [illegible] पहलिपत्रजा
नियं [illegible] अमरसहउ परकरायां अ
मरप्रवानाअमरकरजाना अमरस [illegible]
रलेप [illegible] अमरस [illegible] पाजानेभ
ताकोहैपरवानअछेदा जाकरेप्रयरती
कहहीन्ता पानसुपारीनारियरकाव
सोप्रसाहसंतनकहै [illegible] सतसुकातक
लो [illegible] सांचे [illegible]
वाहरनीतरे [illegible] भांति
चि तसोभेटी [illegible] चीन्हिकावीरहैभेटी

ऐहीसवमिष्टानचढावा॥कहलिपत्रजो
ग्रनियेरावा॥सवासेरमिष्टानमणावहा॥
सतपुरसकैंहग्रानिचढावहा॥सतसुकत
कैंहभेंटचढाई॥हीनभावकरविनतीलाई
॥ग्यर्महासोपचणा॥ग्रंजरिकाग्रवसुनोह
मारीतुमगुरलीनेंजीवउवारी॥सोयदेव
हमसकलसरीस्याणीदामेंटैवापकवीरस्
॥सतगुरोवचणांग्यर्महासतुमसुनियहव
गीताकरजेहकहौंपरवानी॥सवालघचु
कजोपरईतिहिकारनमारियरग्रहुसरई॥
वहुतगातिसौतलगावैंग्रतलोकमह
वहुरिनग्रावैंनिनवारिवरलोलगवैं॥
ग्रतलोकजनकोग्रस्थाना॥ग्रैंचिस्वीर

मैमारोकना ॥ वानमारजगतजसलीन्ह।
तिलकक्काढियर्मनकंहद्दा ॥ [illegible]
यरमोरिकैंजमसिरपरोउतारा ॥ वचनयहै
हैवाकवीरकोप्रसादतवहीन्ह ॥ [illegible]
[illegible]
कर्सद्दप्रकासा ॥ अजसद्दकरपावैभेद।
नहिपावैरतिजोतिअछेद्दा ॥ तवहिपान
कोलिट लीलिन्हा ॥ अजवकरपावाटी
का ॥ सतकाअंकत लीलिन्हा ॥ मंत्र
उचारएकतवकंठ ॥ सुखसागरसुमे
रुअस्थाना ॥ त लीवापाजीसुप्रवाना
सेतपानकोअट रनकाया ॥ सीपमाहिजि
मिस्वातिसमाया ॥ न [illegible]तपवनफिरत

संसारा॥निरमलपवनहंसप्रसवारा
तवहीतिनुकावेगितुरावा॥जन्मजन्म
केपापवहावा॥मंत्रतंत्रकाकोप्रास
नवासनमनकलपनहैसौसर्वभूत
कहैकबीरसतगुरुमिलौमिथ्याकेभ्र
मथूकाकुपंथिरातवहिप्रवानहोजो
जानीमुक्तहोईहंसाचहिचानीघहि
नैछोडयमप्रस्थानावायेदुर्गहानी
करथानाप्रगाहिचित्रगुपिनहिभा
रथानामसुनायकारहंसउवारा॥डुटै
घटप्रछसीकोरीहंसातरैनामकीजी

हांविलवेउग्रा॥ कहैकबीरजौ॥रभि
लैं॥तौहंसहेयपहुंचाय॥यौपढ़ि॥हैप
रवानाहु॥नवचावै॥ग्रानपरम्पहव
टाहिसमवै॥घटकोपरचैकोईकोईपा
या॥जीतेजीतिचलैजमराया॥तबहा
सन्कोसहसुनावै॥विनासहपारि
नाहिपावै॥विनसहजोपीवैपानी॥मा
न॥माहेरस्थिरसमानी॥मनजलनो
॥॥गमसरायरानिमिलजल॥हंसा
पियेग्रघाई॥कायाकंचनमनमगन
कर्मभर्मभिटिजाय॥सतसुकृतकोनी
रमगाय॥यनीकेवालकग्नानकराया॥

कारग्रज्ञानसीसनवावाला है कबीरसु
नौधर्मदासाग्राहिग्रंतरेकजोतिनिवासू
चौदहभवननवखंडमौंरेकाहिसतकबी
रासपुरा[illegible]निरभयपदकोचौकादीन
सीलसंतोषदैमंजनकीन्हापरमपरती
तपरमअजियारासतसुकिमेरेजेवनहरा
सतसुकितकाफिरीहुहार्दाजलभयोपाक
संतनसुबहासवसंतनमिलिकियाप्र
कासावापकबीरकोजिवावौवनीधर्म
दासासवसंतनप्रसादतवलीनाम्रुत
अगैपदकोतवचीन्हासपुरा[illegible]
कहैकबीरधर्मदाससोग्रदतीकोपरमा

न॥ यहतविवियसवकाजोकरौ॥पावै॥ इ
निरवाना॥ [illegible]
॥यमहासविनतैकरजोरी॥स्वामीर
नियौविनतीमोरा॥कवनवस्तुप्रा ति
मौयरही॥कवनवस्तुलैसेवाकरही
सोसवमो॥कहौसमुझाइ॥प्रसन्नतावि
धिमैकरोवना॥ [illegible] प्र
थमाहमहिलसेतस [illegible] रतिनि
रतभगतहै तयारा॥कंचनकेरथारवन
वावा॥तामेमोतीप्रानियरावा॥ [illegible]
प्रनमैपहुहा॥ [illegible] कारहै
सो॥ [illegible] रीएककंचनकीहोई॥तामेंह

८ लल प्रसाद कर सोई ॥ नारियर इक सत
ऐक प्रवाना ॥ सवा तीनि मन लौंमि घृ
ना ॥ पाटं मरयो तीतहा चहिबौ ॥ हीप
मालिक वहुति कला हियौ ॥ नई वेदि तहां
आनि वराई ॥ चंदन और कपुर मगाई ॥
जरी केतहं घ्रत नावा ॥ पान सहस्र
दस वरवावा ॥ तापीछैं परसाद सहहा
नी ॥ मुख पुजा सा वनकर जानी ॥ लवं
गसुपारी लाई चीलीजै ॥ मेवा अरु फूला
तियार हजै ॥ आरति फल तव हीजिव पा
वै ॥ सवसेर महाकंद मंगावै ॥ मनमौ
यहु आनंद वढाई ॥ अरु तीफल सोई

पुनपाई॥ अपनेस्वा [illegible]
भवसागरसैकैसंतरई॥सोंनेकेरक
लसयरवाई॥तहापरवानालिखैव
ना॥ प्रावानावालकक हहीजो॥ह
सरूपताकैहकारलीजो॥ऐसीआरती
करयमहासू॥सोईपावैल [illegible]
॥ [illegible] यमहासाव० ता
अनुसारा॥ [illegible] तारा
ऐसांवियआरतीन [illegible] ॥सा जव
किमिभवसाग तरई॥काल मैजिवहा
लि [illegible] ॥ इवांवेनाकिमिभजिसमो
[illegible] हाइहसमुकताई॥सो
माहिस्वामि महवताई॥ [illegible]

वा॥तवसहिवअसकहिवेलीनाम॥
तिकाविधिजापरनहीसोई॥सहजभाव
आरतकरसोई॥सवासेरमिष्टानमें
गावै॥नरियरएकैआनिचढावै॥स
वासैपानकहैवपरवाना॥लौंगलाय
चीयहवंयाना॥ताहापांचपहमंगल
गावै॥सावनकसेवामनलावै॥ऐसी
विधसौआरतिकरई॥सोप्रानीभवसाग
रतरई॥योतीतहांआनिरेकायरई॥सत
गुरकेरनिधावारिकरई॥सावनसोव
हुप्रेमवढावै॥सतस्पहुइग्यानसुना
वै॥ग्यानअनूपकरसहवुजावै॥संतनसौ

वहुप्रेमवढावै॥जोइहनीनाहिरसौ
हारा॥ताकीसहिमाहमारौविचारा॥जो
ईतनानाहिनवनिआवै॥सोकउ नरपा
रकिमिफवै॥छाहसआरतिनावनिआ
[illegible]॥फणानआ
रमाहैपरवानाहआरतिनाहिघो
ऊजाना॥साचवकारए साहकाराइ॥
वरसरोजकेकरमनासा॥साजी॥पान
प्रवानापावहासतउ[illegible]हिमाजानि
तेइहसासतहै॥औरजुछआ[illegible]
[illegible]यमहासमेतुनेसुनाउ॥आर
तिनोहआनजम जाउ॥अधरसारआ
रतीसोई॥विनअधरसवगयेविगो

अघर मेघ्जानपर संगाता चोपाल
रहैं नहीं संगा आरति पहुत भांतिसो
करई अघर मेघ हिये मैं परई सा
ही अघर मेह न जानव्यातैं पैं है
नाई ताको कहो न मानिये आपु न
जीवन साई चौपाई आरत मेह अघ
र है नाई सारा अरदास कृपा सा
कुछ पसारा जाको अघर पर चे होई
आरत फल पावत है सोई ॥ मन्त्र
घट माहि विराजै ॥ सब अघर
गुनि साजै ॥ ताकत महिमा कुछ न
ई ॥ अरदास सा वृथि रलाहोई ॥ सा अघ

रजाअद्ध जाना [illegible] नवमुच्चभा
ना गुरसाइजोअद्ध [illegible] अद्ध
रमूरखसगमना कउ [illegible] रवोहीजीवन
कहहु [illegible] नजियनूरकउारे
जोगुरहगासिष्यकहहेता नकपरेगुर
[illegible] रआरातिकरइ
यमरायकेफंदापरडारयहैमेहनहीजान
तप्रानि [illegible] पवानी जैसें
ठगियाक [illegible] सैंजाना सोकउहा
री अद्ध [illegible] नाहिनपावै आपुहो
आपुजाउगुरुपा [illegible] सो
ईसाँचहैजिनसद्सोंपरचेकरी सुरत

निरतसमेटि कैसोई नामनि हु ग्रछरट
रीरहु नपूरेग्यानसूरेपंथपरमारथ
व है हुषूमिचसमानईकचिता हुति
नावन हीगहोसोरणासतगुरसिंय
कवीरानउनपटतरग्रवकोव है सुनि
योयरमनिवीरानसितासवकाडि हार
है ग्रतश्रांगंथग्रमरमूल चौपाई
नवरनिंसहमोक्षिमाछायमह
सुवचनांचौपाईगहसुनियमहा
सहरवानौजिभिपंकजविगसैलखिन
नौहेसतगुरमोहिदायाकीनताजनम
सुवारथमैग्रवचीनतायमहासविन

तांग्र॰ सारी स्वामी कहिये मेहवि
चारी इक संसय मोरे घट माही कव
नौ विधि सौ छुटति ना ही मृतलोक मेंहं
पांखंड धर्म कै संजीव होई नि हकर्मी
तु सतगुरु निजग्यान नाया सिष्य
पखंड तजै न माया सो मोहि सतगुर
मेहवता जातें होय हंस मुकता उ
पाखंड जीव मुकत न होई सोहं साकर
मुक्त विगोई जपत ग्यान व हुत करजा
[illegible] व हुत लाप्पटान [illegible]
कष्ट का न आयि कार्ई तव पाखंड ने ख
हो जाइ [illegible] धर्म हासा म

सुनौविचारीपाखंडीगतिसबनिरवा
रीसतेसद्घटनाहिसमावौतौलगस
दपाखंडकहावौतुमजानतहौसद्प्रवा
नाविनाज्ञानहीसद्समाना।ज्ञान
सद्घटमाहिसमाना।सोपावैगुरुपद
निर्वाना।माथेतिलकगरेजपमाला।ही
येपखंडनमिलैगुपाला।[illegible]हैक
वीरविचारिकैसुनिलौहोवैमहासा।स
तसबहजिहिघटबसैतहपखंडविनास
।यौपाइजाकोमनपाखंडसोंराता।सो
इनकीमहनिहचेजाता।पाखंडहरहैग
तहीग्राही।सतवचनमानौघटमाही

दानदेयऔरपूजाकरहीपाखंडिय
यमजीवनहीतरई जोगजुगततीरथ
फिरिआवै पाखं जिवठौरनपावै
यमदासनि [illegible] [illegible]
दमोवासाकीजै सतसवदसत रस
हिजानै नामविनासवजूठवमानै
नाम छोडिनहीऔरहिजानै निरगु
नसरग नरेकाहिमाने अगुसगुन
तनानजिवा जचीनैसो सहमा
रा जहादेवतहास सरूपा वालन
हारकाअचरजरूप चिरजवातका
नकीनाही सवनसतगुरनहीपावै

पाहीं॥ सावी॥ निहग्रघ रजव पावही
मिटि है सकल ग्रहेसा॥ बिन सतगुरु बा
हीं मिलै यर्म हासउ पुहेसा॥ यर्म हास,
पचन॥ चौपाई॥ यर्म हास बिनती ग्र
नुसारा॥ ग्रर्ज एक सुनियौ करतारा॥ सक
ल भेद गुरु मोहि बताया॥ ग्रान भेद मै
नाहिं न पावा॥ ग्रान भेद मोहि प्रगट व
तावौ॥ दया सिंध मम चित्त बुझावौ॥ ग्रा
नरूप का है सो कहियै॥ ग्रान भेद को सेक
र लहियै॥ बिन सतगुरु को भेद न पावै
कहि विधि मन की संसय जावै॥ सतगु
रु पचन॥ ग्रान बीज है नाम सरूपा

दानदेयऔरपूजाकरहो॥पाखंडिय
यमजीवनहीतरई॥जोगजुगततीर
फिरिआवै॥पाखं जिवजै रनपावै॥
यमदासनि॥ छेंसुनिलीजै॥
हमोवासाकीजै॥सतसवहसत रस
हिजाने॥नामविनासवजूठवखाने॥
नाम छोड़िवानिआरहिजानै॥निरगु
नसरगुनएकहिमानै॥अगुसगु न
तेंनामनिवा॥ज चीनैसोंसंतन्
रा॥जहाहेवैतहास: सरूपा॥बोलन
हारकाअचरजरूप॥आदि जवातक
,नकोनाही॥रवनसतगुरनहीपावै

थाहीं॥ साखी॥ निहग्रघ्र रज व पावही
मिटि है सकल ग्रदेस॥ बिन सतगुरु बा
हीमिलै यर्म हास उपदेस॥ यर्म हास
वचन॥ चौपाई॥ यर्म हास बिनती अ
नुसार॥ ग्रर्जुन एक सुनियो करतार॥ सक
ल भेद गुरु मोहि बताया॥ ग्यान भेद मै
नाहिन पाया॥ ग्यान भेद मोहि प्रगट व
तावो॥ दया सिंधु मम चित्त बुझावो॥ ग्या
न रूप का है सो कहियै॥ ग्यान भेद को सेक
रलहियै॥ बिन सतगुरु को भेद छिपावै
कि छिपि बिधि मन की संसय जावै॥ सतगु
रु वचन॥ ग्यान बीज है नाम सरूपा

दान देव और पूजा करहीं पाखंडि
यम जीव न तिरई जोग जुगति तिर
फिरि आवै पाप जिव ठौर न पावै
यम दासनि [illegible] तस
हमो वासा कीजै सतसव हसत रस
हि जानै नाम विनासव कुछ न जानै
नाम छोड़ि नहीं और हि जानै निरगु
न सरग नरक काहि मानै अगुन सगुन
तें नाम निवा [illegible] सहमा
रा जहां हंस तहां सरूपा पालन
हार का अच जरूप अचिरज वात क
नकी नाही [illegible] वन सतगुरु न हीं पावै

याहीतावीनिहग्रहरजवपावहै
मिटिहैसकलग्रहेसाविनसतगुरु
हीमिलैयमहासउपदेसायमहस
वचनचौपाईयमहासविनतीग्र
नुसारागुरजरैकसुनियोकरतारासक
लभेदगुरमोहिवतावागुरानभेदमै
नाहिनपावागुरानभेदमोहिप्रगटव
तावोदयासियमभविवबुझावोगुरा
नरूपकाहेसौकहियोगुरानभेदकोसेक
रलहियोविनसतगुरकोभेदहिपावै
किहिविधिमनकोसंसयजावैहलागु
रुपवचनगुरानवीजहैनामसरूपा

समुझत नाहिं ग्यान की बाती ॥ गयउ ची
जव कर अभिमाना ॥ मसमझ नाहिं ब
को ग्याना ॥ संजातरपन औ उत्कर्म
भवेहविचारसहार चियमा ॥
औ विचार ग्यान बखाने धर्मविया
नकि सावहु ग्यानै पिच भगतकी नृजि
यनारा ॥ मन मौकी कृव हुत हंकारा ॥
हमसन कोई नाहिं कुलीन पिच भक्ति
वहु तैलवलीना ॥ वेद सास्त्र हमनीकै
जाना ॥ औ ग्यान बाति नवाना ॥
नावसंतजो जाचक आ ॥ तिनहु हद
वहु तारिसिधो ॥ इनौ नपृक भवहु

कीन्हा॥मुडमुडायेदृपीहीन्हा॥जाति
पातकीलज्यात्यागी॥निसहिनाफिरहि
नामअनुरागी॥तातेइनैनमानतको
ईपेटकेकारनजातविगोई॥जातसमा
ननहीओरविचारा॥तातेब्रह्मनजातस
हारा॥यहमतसबब्राह्मणहिलीन्हा॥
जातेंसिष्टकर्मभहीन्हा॥जिनप्रभुरचौ
सकलसंसारा॥तिनहिविसारिवुहकी
रा॥प्रभुहिछोडिचितअंतहिवासी॥ज
न्मअनेगफिरहिचौरासी॥ब्राह्मनप्र
भुकीभक्तिनजानी॥ब्रह्मरूपमाहीप
हिचानी॥छत्रीयर्मसुनोविचहारा॥

समुजतनाहीग्यानकीवाती॥ गयन्ही
जवकारग्रमिमाना॥ हमसमनाहि
कोग्याना॥ संजातरपनग्रौ॥ तकर्मी
भवेहविचारसहा॥ चियमा॥
म्रविचारकरग्यान॥ बधानेयमविया
नाहिसावहुग्रानेपि॥ भगतकीनाजे
वनारा॥ मनमोक्षीन॥ तुतुकारा॥
तुसवको॥ नाहिलीन॥ पिनभाव
वहुतैलवलीना॥ वेदसास्त्रहमनीकै
जान॥ ग्रौरग्यानना॥ हीसुनकाना॥
सायसंतजोजाचकग्रा॥ तिनहुद
वेवहुतारिसियो॥ इनाहीन॥ पृकभवहु

कीन्हा॥मुडमुडायेदृपीहीन्हा॥जाते
पातकीलज्यात्यागी॥निसाहिनफिरहि
नामअनुरागी॥तातेइनैनमानतको
ईपेटकेकारनजातविगोई॥जातसमा
ननहीओरविचारा॥तातेब्रह्मनजातस
हारा॥यहमतसबब्राह्मणहिलीन्हा॥
जातेसिष्टकर्ममहहीन्हा॥जिनप्रभुरचो
सकलसंसारा॥तिनहिविसारिवुहकी
रा॥प्रभुहिछोडिचितअंतहिवासी॥ज
नमअनेगफिरहिचौरासी॥ब्राह्मनप्र
भुकीभक्तिनजानी॥ब्रह्मरूपमाहीप
हिचानी॥छत्रीयर्मसनोविवहारा॥

सम्मुक्त नाहि ज्ञान कोटाती गाय है।
जब कर अभिमाना। [illegible]
को ज्ञाना। संजातरपन और कर्म
भव है विचार सहार चिय मा।
म्रो विचार कर ज्ञान [illegible] धर्म विय
नाक साव ज्ञानै पि भगत की नमज
यनारा। मन मोक्षी [illegible] कारा।
हम सन को [illegible] लीन पि न भक्ति
यहु तैल वलीना। वेद सास्त्र हम नीकै
जाना। और ज्ञान नाहि सुनाना।
साय संत जो जाच कर आई। तिन कहु दे
खि वहु तारि सियो। इन तो न पूकर्म वहु

कीन्हा॥मुडमुडायेदृपीहीन्हा॥जा
पातकीलज्यात्यागीनिसाहिनाफिरहि
नामअनुरागी॥तातेइनैनमानतको
ईपेटकेकारनजातविगोई॥जातसमा
ननहींओरविचारा॥तातेब्रह्मनजातस
हारा॥यहमतसबबाहेगहिलीन्हा॥
जातेंसिष्टकर्ममहहीन्हा॥जिनप्रचुरचै
सकलसंसारा॥तिनहिविसारिबुहेक
रा॥प्रभुहिछोडिचितअंतहिवासी॥ज
न्मअनेगफिरहिचौरासी॥ब्रह्मरूप
प्रभुकीभगतिनजानी॥ब्रह्मरूपनहीं
हिचानी॥छत्रीयर्मसुबोधिवहुरा

गउब्राह्मनकेरखवारा॥गर्ब्भमारिहि
खाचितमाहा॥कालमाहिछत्रीयर्म
हिराहा॥ब्राह्मनसंघरवाला॥पाछे
छत्रीयर्मकहाँरहोजानी॥ग्रानीका
त्रियाग्रानघरजा॥छत्रीयमतवैनासि
नाई॥यर्मनकरैनगुरकहँमानै॥ग्र
पनेमनमहग्यानवसानै॥जौग रमिले
तौग्यानलसावै॥व रिनजोनासंकट
ग्रावै॥स्केनामकोकैनिवेदा॥चारौ
यर्मतासकेचेरा॥स्केहियर्मसवहि
कोक खा॥चारौयर्मसाटकेसरना
सायनकीसेवानहीकरई॥वहुग्र

निमानहियेसौंवरई॥सावी॥नमतस्
पचीन्ताननहीचालचलैकछ्रानी॥
छ्रीगयेअभिमानमौंकहैकवीर॥
वमानि॥चौपाइ॥तातेपरसरामअप्रीत
॥उनछ्रन्हकोकीन्हसंघार॥वारि
नवुढनकौभयेकाल॥छ्रीमारिविप्रप्र
तिपाल॥मुखकाहुग्रननचीन्ता॥
सतभगतिपरचितनहीदीन्ता॥क्षोरिन
हत्याछ्रीकिरई॥तीनहुलोकवडाई
यारई॥छ्रीसोइहिमाजिहिआवै॥प
रजहुवीतअपहुपावै॥वैसप्यमअ
ववेहवसानाकिनजानमनअौरन

जमनलाई॥बहुतभांतिसौंपूजहिजाई॥पा
रसनाघरमगुरग्यानी॥ताकी नहींपाव
हिंसहहानी॥ताकेकर्मकाटसबजाई॥स
तगुरचरनरहैलवलाई॥कबहूंग्रापक
रताछेवरतै॥कबहूंजीवसुग्रुवनूलरतै॥
जबसतगुरकीदाया होई॥ग्रघरमेंहपाव
हैसोई॥ब्राह्मनछत्रीवैससमांना॥ग्र
घरमेंहनाहिपहिचाना॥ ॥ ॥ग्रघरमे
हनपावहीकरैबहुतग्रभिमाना॥धर्मस
वैवेनष्टहौंसतवचनपरवाना॥ ॥पाइ॥
चारिवरनमेंसुद्रग्रधीना॥सेवाकरैव
हुतलवलीना॥जितहिंगितसतगुरका

पाई चारिवरनमैसोअधिकोई सू
सेवाचितमैवर [illegible] सेवासो
करई घत्रीसौजोकरैहिताई नितनेम
जोप्रेमवढाई वैसयमहैंवियकीपूजै
[illegible] जो अैसें ब्रह्मिव्र
ह्मवमाना ब्रह्मनकीसेवाचितआन
कलिजुगमहिसुद्रअधिकारा तीनियम
मकोनयोसिंघारा यन्पसुद्रजोसेवाकरा
ई [illegible] यहतोकरनीसुद्रकी सुनियो
हिर मैंदासासतगुरचरनजोसेवहां
सतलोकहंवास [illegible] यमैंदाससु
क्रितओतारा सुद्रगेहतुम अवतारा

सतमजितजोचितमहियरिहौ॥तुम्हरेप
हेंब्रह्मरातरिहौ॥तुम्हेरेपाछेछत्रीतार
तुम्हरेपाछेवैसउवारा॥चारोवर्नमुकि
तुमहोई॥जोकोईतुम्हरेवचनसमोई॥
॥सर्वा॥जवप्रानीजन्मतभयोसुद्रस
कलसंसारा॥कहैकबीरतववाचिहैय
मद्यासपरवारा॥चौपाई॥यहतुमसुनौ
वरनकरलेवा॥मुक्तभेहतुमकरहुवि
वेवा॥तुम्हरेसिवसवजोपावै॥विना
सद्गनहीसिव्यकहावै॥सद्गेहजोपा
वैअंगा॥ताकेकालनहीप्रसंगा॥विन
अघरसवकौदुखहोई॥यहविवसव

हीजायविगो [illegible] ओरसकालहैंजमकी
यारा तिनहि[illegible]लयरिकरैअहारा
[illegible] यमद्वार विनतीकर
जोरी स्वामी [illegible] विनती [illegible] तुम
दयालहोअंतरजामी करकृपामोपा
मोपरअवस्वामी तुम्हरेवचनमुक्त
हमपावा हमरेवंसकासन तनपावा
[illegible] सतव रअसकहि
वेलीठ अवमैकहौंवंसकरचानो
जिहिंवि[illegible] [illegible]यरेभाई सोअव
तो[illegible]सुजा[illegible]थमहीवंसगया
नमनलावै स जसमायपरमपद

पावै॥निरमाया हुइ जग सों रहई॥मो
ह चीति मन हर्ष न करई॥जो मानै तौ अ
ति भल जाना॥न ही मानै तौ सम ताज्ञान
जो कोई नाम कबीर हियै धरई॥ता सो कछु
न अंतर करा॥आसा छोड़ि नाम लौ लागै
॥है छछोड़ि सतलोक हि पागै॥जो मन
कै करि है हंकारा॥नि हचै वु ऐसव पार
वारा॥सत नाम जिस ताहि मन लावै॥अ
पतरै और जिय मुकतावै॥जो कोई माया
आनि चढावै॥सा यन कौ सब देय ल
टावै॥सत वचन सब सो पुनि भावै॥
सत नाम मन मैं अ मिलावै॥कबहुन

क्रोधकरैमन दाही जोवोलैसाएप्रान
की ह ही ज्ञानावचारैस ह नावै
सवजीवनक ह्योपपगवै मुरेक
ल ह्वंसजा नई तिनकोंगचव
पुनिसाई ग नहिकियेचाकिन हैह
अभिमानाहिसोजाइविगोई तवअप
नवहुतपाई घलवलकरहत
वाआई सारस सानिकटनजाई
गैहुतरहेपछता सारसहुजोत
टमाही ताकेनिकटहुतनहीजाही
वंसतुमारकेरयहलेसा विनाना
मनी होयविवेका जाकोअमरनाम

मिलिगयउआसोप्रानीनिरसंसयभय
उआअमरसद्दजाद्यूपरगासा॥तहावा
हैनिजहमरोवासा॥घंटा॥जोअमर
सदनपायहैसोअयहुयपछिताय
हौ॥जन्मजन्मनकष्टवहुतौ॥जराम
रनसमायहो॥अंसवंसनहंसपंगत
कहीसवहरसायकौ॥यहैरहनरहै
सोलोकपहुचौ॥कहैकवीरसमुझा
इकौ॥एतेआअमरमुलगतपनामवं
समहिमाजरनिंसतभोविश्रामा॥
गयमहासोवचना॥चौपाई॥यमहा
सविनवैकरजोरी॥स्वामीविनतीसुनी

यैमोरी जातु मकहीसतपरवान ॥
गुरकवचनसत [illegible] तुजा
नीपुरसगुरमाही तुम्हरीदया स
तजाही तुम्हहिपुरसकछुअंतरना
ही हमरहिलवहुपारवअ ही ह
मसवकुकियगुरकेपासा तुम्हरीद
यालोकरहिवासा तुमसाहिवहोस
वर [illegible] तुमविनहंसकोनपुक
ताई हमरेवालकातुम्हरेपाछे [illegible]
[illegible] तवसाहिवअसकहीवु
माई वंसतुम्हारमुक्तसवपाई जो
कोउपालवाहाप्रकमलरा [illegible] नसो

पंथ होई उजियारा॥ पंथ माहि जे वाल
क आवैं॥ ते तुव वंसन माथ नवावैं॥
तिनि सौं भगति मजीठा होई॥ सार सद
चलि है निज सोई॥ नाह केरि वाक्य लक
जो होई॥ तिनि का मुक्त नाम सौं सोई॥ ना
ह सनेही सद्द हि जाना॥ भव सागर तजि
लोक पयाना॥ विंद्र के वालक कर हुआ
जाई॥ मान गुमान और प्रभुताई॥ वे
तौक है हम सम नहीं आना॥ सतगुर

यै मोरी जोतु मकहीसतपरवाना
गुरकवचनसत मभान हमजा
नीपुरसगुरमाही तुम्हरीदया स
तजाही तुम्हहिपुरसकछुअंतरना
ही हमरहिलयहुपा [illegible] ही ह
मसवकुकियगुरकेपासा तुम्हरीद
यालोकरहिवासा तुमसाहिवहौस
वसुमहाइ तुमावन हंसकौन क
ताई हमरेवालकातुम्हरेपाछें
गुरकवचनांतवसा [illegible] हीवु
माई वंसतुम्ह [illegible] सवपाई जो
कोउवालकाहोयतुम्हरा तिनसो

पंथ होई जिय्यारा॥ पंथ माहि जे वाल
क आवैं ते तुव वंसन माथ नवावैं॥
तिनि सौं न गति मजीठा होई॥ सार सद्
चलि है निज सोई॥ नाहक केरि वाक वलक
जो होई॥ तिनि का मुक्त नाम सौं सोई॥ ना
हक सनेही सद्दि जाना॥ भव सागर तजि
लोक पयाना॥ विंदु के वालक रहु अस
जाई॥ मान गुमान और प्रभुताई॥ वे
तौक है हम सम नहीं आना॥ सतगुर
वचन प्रतीत न माना॥ सत सव्द जिहि
वालक जानी॥ सोई पाय लोक सहि
दानी॥ जिहि वालक पर वाना पाया॥

ताकहजान वंससुभावा [illegible] ह
मरवालकना ॥ केग्रोरसकलसवमु
ग सतसवहकहजान हीकालगहैन
हीह [illegible] नसद
पसा ॥ विनासहनहीउतरपारा तुम
विनसहमुक्तनहीपावै कितनोग्यान
गम्पफैलावै वंस [illegible] जनजा
ना विनासहनहिवंससमांना यमि
हासनिरमोहीहोउ वंससोचचितधाउ
[illegible] समाना यहै
वचना मचितनहिआना [illegible]
[illegible] तुम [illegible] तवसाइ

मैंदुकौजिहिसंसवजाईतुम्हरीदया
आजजोपाऊंतौसबबालकलोकप
ढाईसतगुरोबचनातबसाहिबस्र
सबहिसमुझाईविनानामनहिलोक
समाईनाहबिंदुकेबालकहोईविना
नामकहुमुक्तनहोईकोतोपढैगुनै
औगावैनानामबिनाभटकामरौ
हमकौंमायामोहनहोईसबसंसारा
सतहैसोईधर्मधासतुभवहोईप्रानी
यहसंसयकसमनमहिआनीगुरक
हमाहिसबनकरहोईतुमनमैंपद्य
तावनकोईतारनतनसतहमसोई

विनसतगुरवुडासवको ॥ सतगु
तोसवासिहुउवारा ॥ तु वालकाम्र
वकवनैमारा ॥ जिनैचिंतामन
महकार ॥ सतगुरचरनहरदमह
यर ॥ एकवालम्रावहिजवमाई ॥
सवैनिश्चयहुवोपरपाहाडहिलगि
जावजंतसवकानियौव लगिसव
सतगुरनहिवाहियौ नैमारसतगु
कांयै ॥ पारलगावहिजमकांहवो
य ॥ जमकाम्रमलछुटिजवजा ॥
सतगुरसरनजीवजवम्राई ॥
कौ कवीरविचारिकांसडियौहो

यर्महासाग्रमरमूलजोजानहि
ताकोसदप्रकासाकौपाहाविनु
हुदनुबाहलांयर्महासविनवेक
रजोरीइकविनतीसाहिवसुनमो
रीतुमसिरआहिजगतकोनारा
सवजीवनकोकरौउधारा।हमकं
हनहिंगुरुस्वाईहीजौआपनमार
आपसिरलीजौसतगुरोपचना
तवसतगुरुअसवचनउचारा
तुमकंहहीनहिजगतकोनारातुम
रीमुहरचलैसंसारा।अघरअघ
रकरौपुकारातुमरेकहैसोजजो

कर ॥ ग्रहस्थपाई हसनसरई ॥ जो
न ॥ मानेक हातु म्हारा ॥ सा चलि
जै जम ॥ धारा ॥ धर्महासेव चला
धर्मघ्यसविनती ॥ सारा ॥ ए रस
भ्रष्ट ॥ सरवालिनरा ॥ तुम तोसल्य
लोक ॥ तवासी ॥ कहिकारन ॥ ग्रा
विनासी ॥ मतलोकमें ॥ कवनेका
जा ॥ मरा ॥ वडपापीसजा ॥ तुं यों
कवनकाजपणुयारी ॥ सोमोहि च
मीक होविचारी ॥ तुमसाहिवसा
रसक ॥ ए ॥ मतलोकमहका
ए ॥ सवपुराव्यचला ॥ तवसाहिव

सार्द्धा॥ प्रवय हुग्रानसु
ईंजवन हीहतोसुग्रवे
रनहीयरतीगगनग्रकास
नहिनकैलासा॥तवनहि
रागना॥तवनहिसेसस
रना॥तवनहीइंद्रकुवेर
ग्रवरनतहांवानहिको
पंद्रहतिथिनाही॥ग्राहि
ालकाछाही॥तवनही
सा॥ग्राहि भवानिनगव
गाहिपुरस्जवहतेग्रकेला
तानहिं चेला॥ग्रापपुरस

असकीन ।सहजा सद्ध हितेंअमयोलो
कविराजा प्रथमहिसुरतसद्धअनुसारा
तेहिपाछेंसवद्वीपसमारा तापीछेंम
योसहजसरूपा तेहिपाछें रमकार
रूपा तवजलरंगसुरतइकभाव स
पतालकनीचेंराय तेंभवजल
करविचारा सकलसि कौमयोपसा
रा तेंतेजततअनुसारा तेजाहिगुन
तें अलक्ष्य द्वारा पांचततसवनिरमा
या तीनौग नातिहिमहिसमाया प्रहलाद
ह महेसुरनामा तानउग नसरूप
केयामा रजग नजतेप्रहलादपानां

सतगुनमायविकारजाई [illegible]
नासिवसंघारपसारा. इतनेमौ[illegible]
लसंसारातेजकेरगुनमान[illegible]
तातेभयोजीवदुखघा[illegible]
याचितआईहंसदा[illegible]
ईयातेहमभ्रमदोमा[illegible]
कारनमोहपर्ह[illegible]
हिआरोपवर्नद[illegible]
तुमहंसनक[illegible]
तनामसमु[illegible]
जाईसार[illegible]

करनसंसारर्हीआवा नामपनसे है
सचवा जोतुमका होकहे आ
आप्रामनाए रसकीलीना पुरससह
साजीवउवर [illegible] कपावनवतको
रा यहचरीतकाछुकहनजा
जम्बलापुरसनीरम
होकला [illegible] पीमरांकरे
पहीसकलकमवसीहोई
वकरैसवको [illegible] अपुहीक
मनै अपनैअपुअपनपे

ऽ॥ अपहीनीहै अपहीप्रानी॥
अपहीवमैअवमवव.नी॥अपने
अपनाअस्तीकार्य॥अपहीमुख
चतुरातपरा॥ए कुलांनअ॥ अ
कुलांनी॥अपुवनवमैअ॥ महीन
सतीकलुअपुअता॥वा॥अपही
सता॥सतीसह॥वा॥यहैमेहप है
सोई॥सतगुरमीलेजहीकहोई॥वा
है मेहजनट मनीलेऊजनी॥नांरम
लजलगंगा॥मभमीनी॥यहैप्रानमै
तो॥सुनुवा॥वांरालेजनजनेहमे
य॥याहैमतागुप्रातुमरखोहु॥हम

ठ्ठ मनो ॥ अतमग्यानजहीकाहहोइ
तकाहकालानाचपैकोई ॥ ऐसीयरा
नीयरोयमीसु ॥ मोसगरातजीहोहो
उहस ॥ सकलपासरासुनीसामना
सुनीहीसहपाहीचनासुनीसीमीरी
कीऐरीपवै ॥ देहछोडीसतीलोकासी
यावै ॥ यमंघा
साकहैसुनोगोसई ॥ अतमग्यानग
मीनहीपड ॥ अतमग्यानमोहीस
मुकाउ ॥ जतेसकलाहंसामुकाउ
यमंहासावाहु
माताअपारा ॥ तकरामैअवकाहो

वीचारा॥तवसाहेवह्या चतअई
अताभग्यानतेहीसमुजाई॥जमअ
गमीजनीजवपवै॥अतभग्याना
तावघटहीसेवै॥सतीसहजवरा
हैसवई॥सवहीबूवलोकहैभाई॥
सतमीतएकैकैजना॥सचुमुगएकै
कारीमना॥सँचमुबहुनौमीतीगए
॥ह्वीग्यानजकोटभएउअपुहीसा
खा॥अपुहेवएअपैहेवाअपहीअ
पालगवहीलेवा॥अपहीसृनकाग
रमावै॥अपग्यानहोमुकीसमवै
अपहीघतअपुअहीमुगता॥अप

ईयाहैमेहमोहीसुनाईहीरहे
कयलामोराअनीजुडावा।ऐसास
हजोमोहीसुनवाएकवचनमैपुछे
गोसाईसोईसहतुममोहीसुनाई
तुमजोकहसावबहुसामानासजीव
रुपाकीमीहोअगुपानाएकवहुअगुपा
नरुपहोईवरतोएकवहुगुपानीहोई
ग्यानकरतोएकवहुकाहैयाहुब्रंमा

तवोचा० [illegible]
हैकवी [illegible] मेह
कहोतुमपसा [illegible] व्र० [illegible] वीजा
समना [illegible] परावृ [illegible] मि
हुपतहुईकीन्हा [illegible] ऐकसक्तीऐकसेवकर्च
० [illegible] मुल
वीछा [illegible] रामजना [illegible] तमेपचऽरानी
रामवा [illegible] ग्रहेसवैउपजवा
प्रथमैवई पाजोकीन्हा [illegible] वईकिमये
तेजतावक्का० [illegible] तेजाकेमयेनीरानी
रामावा [illegible] नीराकेमयेप्रीथनिरमवे
तैसेवीजतेवीरीघानीरामवा [illegible] तैसे

ग्रंथोंसवैउपजया॥ऐसेउतपनसवा
कोहोई॥योवेमेसवागरेवीगोई॥
द्वारलपचना॥सतगुरजकछ्याकीन्ही
स[illegible]मेहपावैतावाचीन्हीतताम्ही
[illegible]वावै॥हहमहीग्रनहहरूप
ग्रनथामेटीवैग्रंथवतवै॥लघु
द्वाराघापुरससमुजवै॥पुरानग्यान
दीघटहोई॥सतगुरमेहकहपवैन
सोई॥ब्रम्हग्यानवेथ्यमुतीनहोई॥वै
सतगुरकहवैसोई॥ग्यानाकीमहामा
कहीनजई॥ग्यानगमीतेसद्हीपइ॥
सद्सारनीसमोलीकापवै॥सोहंस

सतीलोकसीधावै तेपहु
चैसतीलोकको कालमरामनहीज
नी तेहंसाअवरानमरे सतीपु
रुसाकेप्राणा धर्मदास
कहैसुनोगोसई अपुअपुनपौस
वावीसाराई सतगुरजापेहायाकी
नीं तीनपयानीजावीजकाचीन्हा
सुधीमरुपाहरासजावअवै लध
तामीलीहीराधापहपावै लधामता
प्रभुअवैकसे अमुकीपरेघुटकही
रेतैसे कहैकवी
रसुनुसुकीतावनी रेहीघाटास

मुजीवेहुसहीहुनी॥सुंघीमरुपास
हकराग्रही॥सतगुरमीलैलसवैतही
॥सुदतीनीरातीजवासहुसामना॥अ
हंकरामनकेरावीलना॥हीनमवुग
तीतवाग्रई॥सवघटग्रतमऐकसम
ई॥पुरानाग्यानजीहीघटाहोई॥तता
ग्राहुमेहपईहैसोई॥ग्यानगामीतेमा
यासुजनौ॥ग्रवघटग्रतमऐसमना
॥सोहंसासतीलोकसीयावै॥हुवीय
नवसवैवीसारावै॥घ॥नवहुज
तजहुयमानी॥ऐकवुमुवीचरीकै॥
इमीजीवुजगमेहेवीरे॥जललहरी

बुद्धसाम ॥ प्रमता ॥ साम्रता ॥ जि
मामानातीन ॥ कस ॥ उदर कैज
वम्रपुचीनै ॥ मवहुसरानसीहो
॥ ॥ ॥ नीजीवमयलमवेते
ला कंचन ॥ रोसम्रजसना ॥ जीवभ्रम
मीमेला ॥ पहुपहुमवेजीवसना
॥ ॥ ॥

[illegible]सोभोष्टवतवै यहैज्ञानकमो
[illegible] वौसतगुरुवचनांधर्म
हासस्नुनारचीतलाइजीवसीवमे
[illegible]हौसमझाइपचततगुनतीनीजोस
[illegible]ततेसीसीसीकीनीउपराइसु
[illegible]तौगुनासोसीवकहवैराजत
[illegible]नीसीरीताजीवधानवैसतरजा
[illegible]तीनीउतेन्यारापरब्रम्हसवा
[illegible]तपैरापराब्रम्हप्रसाकीनहस
मजातीगुनरुपकरीसीसीउपराजी
उपजीसीसीगुनानकीधानीतातो
जीवधुपीकरीजनीजीवसीवरमै

[illegible] नमु
लीहुनीम्रई ततग्यानजाकेघटहो
ई जीवसीवकहजनैसो जीवसी
वकहजनेसोई वीनतताव नैनही
का [illegible] लोई मर्म
हीमर्मभुलासंसारा अपनचीनैभु
लेगवरा सवग्रंथांतर [illegible] तंजवज
ई ब्रंमभेदाक [illegible]
ग्यानजाकेघटाहोई परामपुरुसक
हजनैसोई सीतीसहकोमर्मजीनजा
ना [illegible] कुछावसाना
सवमैब्रंम राहनरापुरी वहेरामी

तारतम्ता हुजुरी॥ हुजाकी ताहे जैकोई॥
सतीसहुज को घाट होई॥ जको हुमस
ताग्रुरहयाकीन्हा॥ अमर मेघ ती नही
पुनी चीन्हा॥ अमर मेहल सोपवैजो
ई॥ सतग्रुर मही मान हील बीपई॥
सेंचा अमाय सब छोही॥ सतग्रुर म
ही मान हील बीपई॥ सोक साल्लोक
पहुची हैजई॥ यहै ज्ञान यमीनीस
नीलोहु॥ सबका हु सतीसहुका हीहै
हु॥ मीथ्या ग्यान करो उपाहेसा॥ तोन
ही पहुचौ लोक सहेसा॥ जोतुम कजा
अपन चहहु॥ तौ जीवन का सतीला

वव छ जोकाईसद्दसुनेतुमापर
सो करीं लोक व हीवासा जक
[illegible] प्रतीता
नीजाघ [illegible] अनमोलि

कंचनग्रवटीअमुमनीजाई ऐसेजी
वव्रमामीलीग कवीयभवनाखि
राहीया संसैमेटीअमरपाहलहीया
अमरमुलअमरकाय अमरसद
जीवनहंसापया अमरसद्दसतगु
रसोंपवै वीनसतगुरसवमुलजस

हंसग्रंथ [illegible] धर्म
दासवीनातीग्रंथ सारी हंसतगुरमे
तुमवलहरी सतगुनधर्ममो [illegible] हंस
मुजाइ [illegible]
धर्मदासचीतालेहवी
चारी सतोग [illegible] नीरयरी
ग्रंथमैनोजानसातोगुनकारहीं
राजग [illegible] नोजनसवपरहा [illegible]
जग नमाजान [illegible] सतोग
[illegible] उतामाचा [illegible]
कुलग्रंथ [illegible] वरीघनीकैताहम
गई उतीमंचौकीकीन्हप [illegible] म

तौ॥सद्गुरु बोलामनाकी नेसती॥६
यबाऊ मीलीग्रसनाकरावौ॥ज
सोकहीऐसतौगुनमवौ॥जेतनीछ
यहोईघटग्रनी॥लेईग्रहरासोईछ
नामनी॥सद्गुरु बोलीप्रसादाचाढवै
नाजीवातेग्रतमनीमवौ॥मजीन
हीतौजलमरीग्रनी॥गुरुकीदयाग्र
यीकसुमनी॥उगलेईवाहतै
सुबमनौ॥ऐहीवीयीकहीऐसात
कगुपानौ॥तीसारेमनाग्रंगुपागातकि
ईईतवप्रसादापतकरलेई॥ग्रंगुपा
गतनहीहेग्रपावौ॥राजसायमीन्र

कक्कजावै सतगुनयुर्मछुटीजवाज
ई राजसतमासाजईसर्म सतौगुन
यर्माकरैप्रतीपला नेहचैपवैत्यो
कारासाला चेतानीपुरुस
वाई इवीयमवासवैमी
राजगुनतामगुनसतगुन
सवमीटीजकुप्राजोपैरे
मनुताकारीजार कुछीवता
८ [illegible]
मर्मेटीगसोई वेहसहस्रसवाक
हैवसनी वचनवीलासाकहैसव
ग्यानी छईसहस्रमीलीजागरक्ता

नीनेहीनाम
साहेब

नौं ब्रह्म रुपाकहु नाही चीन्हा।
चीन्हे तौ जब्याहु सरा छोड़ा। गमेवा
ही करै नरालोई। सब को ब्रह्म अ
ऊ तक कहई। जो ऊ तग्यानी मेनी सुध
रहई। तकी वताकहै प्रवना। कुछ
नछोड़ै मुरु ज्ञानी। गुरु जाका
मी कहीऐ भई। ब्रह्म सब न मेरह
सा भई। अपही मुरु अपही ज्ञानी
अपही कच्छ सब कहै वखानी। अप
पही उचानी चाहै मालवै। अपही
नी होजा सा भमावै। अपै कुछ अप
ह नही। अपही अपा मेसकर

म [illegible] नहीं
जपातपग्यानअपागवर अरगनरे
कसावअपुहीवासा वजांगरासहो
कारैतमसा अपुतामासाअपलया
अपहाक [illegible] अ
पुअपुकोचीनैनही अपाहीग्यानी
अपरमाहा [illegible] अपहपपनपौची
नीकै अप [illegible] पानच
[illegible] अपकह परममेभेजई
[illegible] अपुअक
थकोईकथासुनई अप [illegible]
पावनाया इजाहाईकैजगतहेवाय

ऐसमावचीयतैकीन्हाततेकोईन
पयैचीन्हाप्रापाप्रपसकलाजंप्र
पीयाप्रपाहीप्रलवाप्रपारा।प्र
पहीजगउपाजवहीप्रपहीहसा
प्रवतारा।चौपाइ।प्रपहीदेवहत
संघरा।प्रपाहीजुथकीन्हाँप्रसारा
प्रपहीमहमराथाकरायापंडोको
सुगाप्रानसुनायाप्रपुहीकावरो
पांडोमरेउप्रपाहीद्रोसावनसो
कीएउप्रपैजोप्रहंकारासरुयाप्र

दपढवै ॥ अपहीमलावु अनसर
अपअमी [illegible] ॥ [illegible]
वैअपेव ॥ अपअतीतपसेवकार
अपहीमाइअप [illegible] ॥ अपअती
ता अपहीखाइ ॥ अपाहीमटमीण
मारेउ ॥ अपहीसवाखइ [illegible]
अ० हालाहाराग [illegible] ॥ अपहीह
रीनीकटहालेवा ॥ अ० हीसकलौवे
दपुराना ॥ अ० हीपोलीअपवामान
ना ॥ अपुछकुसहम [illegible] ॥ वै वेदावी
मेदकोअपानसुनवै ॥ अपहीजीता
अपहीहरा ॥ अ [illegible] ॥

सा॥ऐसीमहीमाब्रंम्हकीकहै
तकहीनहीजईजोकोईयाहमवा
समुझीहैतेइब्रंम्हसमई॥जोपाइ
अखंडब्रंम्हमंडनहीहोई॥संप्रीता
ब्रंम्हयावैसवाकोई॥अपहीकहै
ब्रंम्हअखंडा॥अपहीखंडताकहै
सावखंडा॥अपहीमनसरूपकहै
वैअपुहीजगवस्तुवै॥आपु
हीहै॥अवचनवचनहीअवै॥अ
पवचनकहीसवहीसकावुजवै॥
अघअरूपरूपानहीकोई॥अपुही
सकलारूपहसोई॥अपुहीनीराग

नसारागुनकहीरे ज्ञानागमीरे
यहमतलहीरे अपहीज्ञानमुक्तीके
हता अपहीहातअप
हैकवीर नोयमहसौ अैसाज्ञा
नह रूपरोप्रगासा महास
महासवीनतीअ सारीसा
वामैतमहरावलीहरी यहमता
कअ गमावतवा हाराहैकवल
रोयहनाजजुवा तामैव
गोसई सोईक जोसंसैजाई
मसावव जाकहासमुजाव
मोरमननहचेयहअवा मोरेन

सोकसाकहोतोसई यह
कहनहीजई मैंजो
इष्ट अवरजीव न हो
या तकरामोहाकहो
हंसनासोकहोसहै
यर्महासतुम
जोमनैसोसतासु
नैकहतुम्हरा फीरीपह
रवरा तुमयर्महास
सोयौ तवतुमसवा
यौ जोतुम्हरामनाशिरा
तवतकापंथचलैल

जवमनकाहेर [illegible] जमनगीज
जवमनकर मोयोहु सकलनाम
मीटीज एकनमकसेवहु अव
गवनमांट [illegible] मेहासमै
कहोनीवारा जसेहंस [illegible]
मुक्तीहोईसतीनभैपवै [illegible] रीनजु
ईनीसंकटाज वे यमेहासोवचनो
यमेहसकहेर नोगोस मुक्तीव
सोमाहीसणीहु [illegible] ता मुक्तीर्न
मकरीडारा त मतेपसेऊपावनंडरा
[illegible] कीकरेजोवियाते ई यातोहंसाना
रवंयकसो नहीकोईवंयनको
[illegible] संसेकावसो [illegible] जाणहुट

तुम्हारी दाया सो हम जानी ॥ मुक्ति
मुक्ती होउ मर्म मानी ॥ [illegible] राव
[illegible] तव वाक्य हीरक कहे हसी वानी ॥ म
मद्दास तुम वहु होण्यानी ॥ अव तुम
रे जीव्याने हु चै अई हम जान तुमा
सी वाहो गई ॥ बीज मंत्र जानेउ यम
द्दास ॥ अव वाक्य तुम्हो संत वीलसा ॥
जो कहीरे सो वाचा नवीलासा ॥ या
हु तो सवा पद्द प्रगसा ॥ गरथ कहे उ
सव जाग प्रमोया ॥ जो वुझै सपवेसो
यो ॥ जव वुझै गरथ नवी वनी ॥ तव
सो पवै नीजसा हछनी ॥ जव पवै सद

करालेवा तवजन जोहैसवयो
व यवजोगजगीसवकोन गो योवा
हानापुनासवा ऐन योगकर्ष
र सारा ग्रावकोर्टिनग्रानापसा
योमा रानर कालाजस्त्रन ए मस
स्त्रवेहमताभना सेवयोवासवा
पहैर्ह योवाकहीसावग्रानस
न योवाप्रथमसंचुकरीमनै स
र जेयोवसावेनसने जसानीरग
नतासा रगुनाजनी नीरग नस
राग नयोवमनी ग्रगुनसजनह
नोमेटीगस्तु ग्रहा नसोह चैम
स्तु यामहासयहमतर नीलह

योसाग्यानाचीतानहैहु प्रथमहीगतीर
कराग्यानातेहीपीछेफेरीरीततासमना
जबहीततासमनाभई तबहीजीवलोक
कहँजई जबहीततासुहैमोग्रवै योसा
रुपासवैमीटीजवै जबलुमाग्रपनेतताही
जानौ गुरग्रोसीबीछेउपहीचानौ तुम
हीसीबीगुरहैसोई तबाहीगुरसीबीसाव
कोई गुरग्रोसीबीरिक्वारीजनौ हुजाना
वसोसावैवीलनो हुजानावसातीहैज
कौनहीसीबीनागुरहैताकौसाजीगुर
सीबीकीमहीमाकहैवीरवीचरीग्रंथ
रामुलाजोजानहीगुतरैजौजलापादा
पाईतुमाकहैसदहीन्हाहवसरासोहैस

रीहै साहजे सालोकानास्तारहै सुमीरा
नाकावलाग्रेसा [illegible] सवप्रज
हैपोई जकोकर्मकटीसवद्वेराद्रवीव्याधनस
हजेउजीयारा जकोद्रवीव्यानापूणसा प्रप
हीमेसवलोकनवसा लोकाग्रालोकासव
हैमाई जोनीजनातीनसंसैजई तातसरास
[illegible]
[illegible]
वीग्यानपरागसा सुमंसानसे जैहैसातीलो
[illegible] सुमीरान सोमाटीहैसवयसा यमनी
[illegible] मीरानाहेउलावद जतेसंसवमुफतई
[illegible]
वनहैपरावनी वस्तारासकोसवमैलान
स तेसेग्यानहीएहरावोसा हीराहे

ज्ञानप्रगटजाव होई। कर्म भर्म सावामीटी
गेसोई। ज्ञान इवीजव हीऐप्रगसा। मोह
तीवरा को भरेउ वीनसा। सतीपुरसमह
हंसा सामना। हंसापुरसऐकैकारीजन
इवीयवोवमीतवगरेउ। ऐकारुपामोरेक
समोरेउ। [illegible] सावचनाय मैहासावी
नतीग्रन्थसरी। होसतगुरतुम्हरीवली
हरी। ऐकावतग्रवपुछोगोसई। जेहीतेम
नकोसंसैजई। तुमतोऐकऐकोहग्राव
ऐकमहतामनीजाहुमापावा। सतलोक
कोकहोकनाकेतवीस्यारा। होप्रवना
केतेकउचगीचेहेजई। सोमोहीसाहेवा
देहुवताई। केतकालवाग्रोचकालई।

सोसावलेवाकहौसमुजाई

कहैकवीरसुनुसुनीतावानी

लोकवाथातुमसुनवीजइ नीसवा

वीस्यारतोहीसामुजावौ लेवांनहीअलेवा

वतावौ कहीएतौलेवाहो गई अलेवावा

तमुवाकाहीनाजाई जासोंकाहीएअगमाअ

परा तवोअ नानपवहीपारा जहँलेव

तहापरालेहोई अलेवाअ ताना हीपवैको

ई एकसमैअैसोयर्महासा अपनचीतको

कहोप्रगसा जवमैं तीलोकमोराहीया

सोहीतनाजानुसोनाहीया सतीलोकसो

अगेचालीगएउ अचीरीजाताहवहेवाता

नरएउ सोअचीरीजामोहीकाहीनाजाई

तमापुघौतौघेउवतई अैसीवातनका

हुजनी॥ बाकहुफेरीपुछीअनीगयमहि॥
सप्रामहीतमोरा॥सुनोग्यानयहहैसुग्रं
जोरा॥कोतेकासतीलोमैहैवा॥पुरसप्रवनन
हीजातवीसेमा॥अैसालोकएहीवेवत्तरा॥
अैसाहीरुपातहापुरससंभरा॥तहवहैवा
सुरातीसामईजीनामोहीहीनोलेलवा॥
॥ल॥अनंतकालामैहैवेवा॥पुरसलोक
ह्यारा॥गनहीतीकहलागुकीजीए॥यमह
सनीरयरा॥कोपा॥नातीकहगनोनी
जयामा॥कोवारानेपुरसप्रवना॥गनतीमा
मरजहामीटाईसारसहघाटहीसामई॥
॥ल॥जोकहगनतीअवौतकोहैसवान
सा॥अनगातीकोमीगनीए॥अैसासहप्रक

सा [illegible] वचनामेहकारीकथा - नवा
जेहीतत [illegible] मनपतीग्रवा [illegible] म्रग्रघडाले
बाकामाजनां [illegible] बंडीताकारी [illegible] ग्रांपग्रान [illegible]
नां जूलगडुजां मीग्रपाव [illegible] तहलगडुवीन
सीरो [illegible] जहलगडु [illegible] नेस्रेमयाजनी
जोहेवेसोमभव [illegible] नीक [illegible] तोजोहतीयाहो
[illegible] हतीयाम [illegible] मेरीसावबो [illegible] एकवम्रहुय
[illegible] हो [illegible] छतपतीमहीसोड [illegible] न
हाउ [illegible] तीनहीपरालो [illegible] नहीम्रवेनहीजई
[illegible] हीगनतीम्रनगनाय [illegible] पुजीकेवम्रसम
[illegible] तवहमाम्रगहो [illegible] पयाना जह
[illegible]
माहवा [illegible] नेगन [illegible] कालेमा [illegible] म
चालेम्रपनम्रास्यागन [illegible] लोकीतकाय
पयाना [illegible] मरणमम्रच [illegible] स्कहेमा [illegible] तकरा

प्रवमैकहोवीवेद्या॥ अहबुधीनीलावर
नीनजाई॥ कहोसुनोतोकोपतीअर्ध्यर्म
हासामैतोहीसुनावौ॥ अस्थायकाथाकेहीहो
पानवुझावौ॥ तहयाहेवाकवीरकोलोकाअ
संकवीरकोहेवायोकाहमजनीकीहमहीकवी
राजहहेसोतहकवीरसरीरुतवअपनोची
नकीन्हावीचरा॥ ऐकेपुरससकलाचीस्वारा
हजाअवराअहैनहीकोई॥ सवाघाहेकावी
रासमोई॥ हमकवीरहमकरातासका
लासीसीयर्महासा॥ हजाअवरानहेसीया
सतीसहअगासा॥ नहीकवीरनहीय
र्महासा॥ अघरारेकसापलघटवासुनस
तीपुरसवाहीसोकरे॥ अहीअंताअघारग
हराहीरे॥ अघरामुलअवरासवपरा

ाला ऐसी भांति संसार थकु जावा जीवा थकु मा
ि बाधा भाजवा सकलावता मीथ्या कारी मना
कोहेका वि रयाहम नाहे मनावासा

मलापासरा जीवाया हामतको सम्मुजीव
अवगवनवोवरी
वमेहासवीनतीकराजोरी वधघोरासुनु
वीनातमोरी नहचैगयानमोहीसाजवा रेका
वताअवाकुमोगोसाई सोसहेवमोहीहेउव
ताई अवगवनभावनावीवीहोई वहीव
तवसाहेव
रासुनावोसोई
कहीवेअनुसारा कहोवीचारातसावेउ
रा पचतताकोपुतरावाणवा तमेपरगट
फुरसमवा तीगुनआतमरुपवनई हुमस
तहतेमुकुतई हीरखावलमोरअनाजु
हनमम्मनासजीकरहीनहीं ततेजीवयुवी

लीन्हा॥ अपनारूप अपनाही चीन्हा॥ ततेअव
गवनकरी रीलीन्हा॥ नकोई अवानकोई गया॥
मनकेमतेजन्मतेभया॥ मनहीगुरुनीमुरुवाव
हाया॥ मनहीब्रह्मसरुपैलहीया॥ मंकरहैयहस
कलापासरा॥ मनहीपपापुनीवीस्यारा॥ मनह
मोहकर्मउपजवै॥ मनहीअष्टतीसनालवै॥ म
हीदेवहराहैवपासरा॥ मनहीपुजेपुजनाहरा॥ म
नहीनरीपरुषकरीजना॥ मनहीपुत्तमनवप
वपवजना॥ मनहीराजरेअतीकहीया॥ मनह
देवनामनहीमीलीराहीया॥ सलाकाहैकवी
रयहमनहै॥ मनकारासाकलापासरा॥ मन
चीन्हतेअवरा हैरा॥ हैनीअघरसदा॥ [illegible]
कलमैंगुकाहीऐमनकीवनी॥ [illegible]

हीसहस्त्र[illegible]चारीवांचारी उतीमभव[illegible]
कहेनीदुवारी मनकेभवव्रतसावकराही
मनकेभवजागतपवराहा मनकेभवाज
गीजोकीन[illegible] मनकेभाहुन्नजाचिंतो[illegible]
नकेभावापतीग[illegible] मनकभावेवुल
सवहेड[illegible]य तुसाव मनकेरीवोटाइ सत
गुरमीलां[illegible]मनकुट[illegible]साव
मनाकी हेरहे मनाक सांकालापसारा
ग्यानचांन्हमनाग्रचालाहे [illegible]
चारी मनकाकाए[illegible]सं
ग्रचीरांजावा[illegible]रंगा[illegible]हीतेहि
म[illegible]मनकेतीया ग्यानांहोईकोईकोईल
तीया[illegible]ग्राचरांकोहे[illegible]वलेवा ग्यानी
होईसोकरेवीवेवा [illegible]ग्रचरटीजा
नो हुजभवनमनामग्रनो हुजपाहोरमे
नाकोभउ ततेसतीग्यानसम[illegible]

है मनाकोनउ ततेचीतामसद्दसंगराम
कहैकवीरवीचाकौसुनीऐसंतसुजाना॥हमसु
मसोनीजुगमौसतीसद्दपरावना॥चौपाइ॥
मंघससुनुसातीसाहेसा॥सतीसद्दकाहिस्तिय
हेसा॥जकोपसाहोईदढ्यानाना॥सोईपवैपहावी
रावना॥छंद॥नीरावानपहापईहौसोग्यानो
हापकउरायरैग्रग्यानपहाकनसीचारीग्र
गसाग्रतामकौकरैजीमीजनाहेग्रवसमो॥
प्रतीवबाघघटाहेजीरैग्रेग्रजोवहैजोहाएत
नोग्यमंघासावीवेजीरैगसौराहासतीनाम
परावानाकहकवीरावीचरीकौपहचैलोका
ठकनाग्यहैमेहजोपवाहीरैतेस्त्रीग्रमरामल
जिवसीवमेहा॥[illegible]
[illegible]चौपाइ॥[illegible]
[illegible]सोतीसरसोवीनातीग्रनुसारीहासु
तीलोकमोहीवरानीसुनवा॥वचनतुमसवे

लालीपवा तुमतोकाहोंअवचनहैसोई सद
चराचकीमीकहोंगोसई तुमतोसहजोकहीस
मुझावा वचनभावमेसवजोअवा अवाच
नवतावचानकीमीकहरे सोमहीस्वामीमेह
वातेरे प्रथमैतौतुमसावधसुनवा तेहीपी
छेफेरीज्ञानादीढवा तुमतोकहोवचनअ
लेमा हमसेवकाकीमीकरेवीवेमा रेकाव
चानकहीरेणहयरी जेहीतेचीताअनातेन
हीज [illegible] तवाकाहांरहअ
काहांवेलीन [illegible] ज्ञान मेहासाकवोकहीहीन
दीरवासीजांकीरवेचांना यमहासमेक
होवीचरी जहीतनीवाहैयाहासंसारा प्रथ
मेसीवी तेजोअर तकहापनहेकु मगड
जवाहेवोतुमदीढतज्ञान तकहहतुजह
प्रवना स मा तनांहचेजावअवे तमा
ज्ञानअवेयाह नवे अनमेकजवाकरवीचार

सोतौ तीनौ लोक तेऽ[illegible]तेसारा सहगह
सहपुकारूलापै अपहीबोलाअबोलासुनावै
अपहीचुपाजोबोलातारहीयाअपुहीवचानअवाच
नजोकहीयाअपुजुरहोईसहवुजवैअपुसीषीहोह
सुरतीसववैअपुहीगुरसीषीजोहोईदेवैसुनैअप
हीसोईजानैदेवैसुनैकहैसपुअपहीपुपअपरा
अपनचीनैअपुकोकुलसवसंसारा[illegible]हम
तातौहमतुमकोदीनाबीरालासीषीकोईपवैचीनाना
यर्मघसतुमकहौसाहेसाजोजसाजीवजाहैउपाहेसा
यलकासामाजकरहैग्यानातकाहेहुपनप्रराधना
जकाहैघुहीमाग्यानहैनईातकाहालुमीनाहेहु
वाईग्यानगमीजकाहाजोहोईसरासहतसोकहोसो
ईजकाहुहवीग्यानपुगसातकाहतताग्यानउपाहे
अनभैग्यानजहीकोहोईहुसारकीताहुनहेजैसो
ईउग्रग्यानजाकाहुग्रगसा अप्रतासरामघटमही
नेवासाअप्रतमरामकीप्र अप्रपहीप्रतास
रामहैसोईहुतीअकीतहुनह

यांगाउसमोई ऐहीमातीतुमंजगसमुझावैं जोस
मुझैतेहीलोकपठावौ अंत न रहतुहीं चैपर्ह ता
कौनीकाटलोकाहैमाई हमतौरेकावंमकाहीदी
ए अनंतालोकाका उरजोचीनि अनंतालोक
कीपराचैपयै का छवीराजोविहुजा अवै
ऐकासमैसतलोकमोरहीया सतीपुरसऐकामो
रहीया छवीराहुमतु नहैऐ जामा
वनारखोटेका सुरतीसरुपातुमतु माई सद
रुपहमाहीनीमई सुरतीस पानांकाटाऐकाम
वा पाराद्य अंतरकछुवनरासा नवंमकस
रुपमोहीकोजानौ केवलावंमहीरुपवसनै
सदम तीरकासुरतीउतापनी सोतुमामोकाह
ठीहुचैजानी अमीरहैमोरेअंसा नोनी
जानौनोरैसुरा अवैजवनीरुपवनावा
महीविहुचैजईनवा नाउ नमभारापू
ाणसा पचाततामारानेवसा जावरुपकी

याहमभई अतामरुपसारुपावताई पचा
तातप्रघटहमकीन्हा नीचैवसुतीहीमोल
नाँ अपहीअपजोराहेसभई अपहीसेस
वाषेलावानाई अपाहीअपजोराहेसभई
मनुबीरुपअपाअवतरा रामकेआप्रगटेस
सारा याहासावरुपभोराहैसाँचा इनहेचीन्हे
सोजामसोवँचा जमहीमहीहैहमरैरुपा स
वापीथामीमेमोरासारुप चोरासीलाछाजु
इबीहमाकीन्हा अपवासुजुईनीमोलीन्हा
हमसोइसारानहीनकोई भमहीमहीस
रहेसामोई भमरुपाहमसीसीवनाहे भम
महीसवराहेमुलाई सुरानामुनीगनाइ
छाअपरा राचीसीसी भमवेउहरा इन
तेभमनछुटनाई ब्रंमहरीसेवाराहेमुला
इ हेकावीराहमतमासोवहीनी

२ जनौवतायाहसही पुरसवतायाहँमोहीसुनई
सोमैतुम्हाम्रनीजानई धर्मदासनीरावौनी
जानैना नहँचैजनौपरावैमभावैना
धर्मदासवीनवैकराजोरी सहेव
सुनुवीनतीस्वामोरी याहकथातुमसंतकाग
बी इसाराग्रौराकाघरावनहेसाबी
तवकवीरवोलेग्रसवानी सतीवता
यासुनीरेग्पानी याहकथहमतेतानवी म
युकराव्रीप्रताहीस्वेसाबी याहेकथ
तेताकही मयुकराकोसामुजा अवरानइस
जनाही धर्मदासतुमपाई
अंव्रीताकथामोहीसामुजावा हीर
हेकावनमोराअनजुडावा सतगुरासंभ्रथ
कीवलीहरी वहुरीनमोसाग्रमोअउ अस
तीकावनीस्वामुसाकराउ सातगुरचरनही
राहेमोयराउ गहागहागीरानैनानरीहाउ

अहोनाथमोहीवाडासुमरेउ॥वहुतअ
नंदाभरेमनमहीं॥अचरीजासुनाहुछा
हुनजहीं॥वचनसुयारावीतीनसमुहं॥
ममसंसैजीमीनगताहाँ॥वहुताअनंदाभरे
उहीयमहीं॥ब्रंमअनंदाकाहोनाहीजहीं॥
वीनतीएकसुनोगुरगुनी॥तुमहीमान
हीजातावखानी॥जोअवाहायाकरोगुसाई
सोईसहमोराहोसमई॥ ॥ वचना॥
कहैकवीरसोईधर्महासा॥एकरुपधर्महास
कवीरा॥लखाचोरासीएकसरीरा॥कयावी
रानामहेवीरा॥सवघटरहैसोवईकावी
राजोवलैसोसिबप्रवना॥सहरुपकवी
रासमना॥सहरुपकवीराकहईसहरुप
होईराहैसामईनीजाहीयरुपकवीरहैसं
चाजकराहैआहासकलपसारा॥एकरुप
सहपुनीएका॥एकभवहुसाहीहैवा

ऐकैहमतुमऐकसरीरा ऐकभवहैमतीकै
धीरा ऐकरूपऐकैग्यानुहरी ऐकहीपुरस
सकालवीस्थारा गुरुरूप जुटऐकैहै
ऐकैसाकालपसारा ऐकजनैसौऐकहु
जाहैसंसारा
नातऐक तरोकुराजोरी सतगुरुसंगैमैटै
मोरी जो अग्रसाग्यानासानवा रहै
भवला राग्रनीजुरुवा ऐक संसउपजी
जीवमहो चारीकरमाहवोजीवपैती
रा ग्यानाकहसवकोई कर्मकरसानो
कुटुंबसाकर्मसकलजीवानाग्यानसा क
र्मग्रायचरुवीनसा कर्मकरैतैसापक
ला वैउचानीचाजुनीचु गतावै कलपड़
तोहग्यान वीचरै कलपाएसटा कर्मसंचे
रै ग्रैसाकथारुनीसाट भाइ साइकहोजो
सेजाइ तुमतोऐकऐकाहग्यावै हु

सराभवकवनाहपजावा।।सवघटब्रम्ह
एकहाहपाई।।तीमीकेवाकस्टसहैजीव
ग्रईजीतुमेकहोसावब्रम्हसामना।।कोई
कोईजीवहोईअग्यानी।।जोकहीऐसवारकै
ग्रहीतोकसग्यानीकथोअगहीरैअब्र
म्हतोसावघटचीन्हौगुरसीबीकहैको
किन्हौ।।यहतोभ्रपभ्रपगहईकहैको
तुमपचलाइ।।जोभ्रसाकहोसकलापम
कीन्हा।।ग्यानगमीसेकैचीन्हौकहैकतु
माकथासुनाईकहैकोअवग्यानीवातईकि
हैकागुरासीबीकाहवोकमभ्रकाहैफला
पवैकोवुजेग्रोकौनावुजावै।।कवनगुर
कोसीबीकहवैतोचायाहासंसेगुरभेटाहु
वीनतीमनोमोरी।।वलीहरीतुमकीछीन
मेलीनतुउवारी।।चाप्रईतवासातगुरवोले

ग्रसावंनी ॥ ग्रंथ रिजाव नालेहु ग्रंथ
नी कर्मलेखातुमपुछेउ ग्रर्ई सोग्रवा
कथातोहीसामुजाई मतपीताजावतम
कामई तहीकमेहीवनीग्रर्ई ब्रंमलो
कतेजावाजीउग्रवा कर्मराहीतानीराम
लपयापवा जलनयीवरीमेघलैग्रवै
वुहावुहामहीमावारासावा भुमीपरंवे
रापहीचानी इबेजीवैमयालापारनी पव
नालागनीमलातवाहोई मयामलीनहरी
तववोई जलकहुपवनजीवभुजीमीग्रा
नागयानमस्तेकन न जाना ॥ मनसी
नरामलापाहापवै जेउक्षातउतावाग्रपु
[illegible] जलासामारा तान
छुटेपहुचैहरावेरा जवजन्मैतावकर्मको
लेउ तानछुटेतावाग्रमीनाहेमा जन्म

मरातेकर्मवीयीकानहाँ अप्रसीवीयीहैक
र्मकोचीन्हाजहीसमेंजैसीवनीअई
ताहीसमेंतैसीहैगईतहीतेकर्मकलफरन
सवासंसेमीलीकीनहैवसानाजीवाव
यीयहीतेजनीअपुनहीअपुपहीचानी
ततेप्रानासुनएकअर्हाजीवकुयीजते
माटीजहाँगुरसीमीएहीकारानाअई
मंअंकोलीमानीमीटीजाईसातेंयाचा
लाएकअईएहीकरानहमाप्रानुसुनई
याहातेहैसाकलापासरा याहीतेहैसवाँ
उहराअताम्रराम्भीन्हीजीनापवाम
कलापसारामेंवाहवाअतमपराम
तामममीलीजाईजैसेसालीतासीयसाम
ईजवलागुनहीचीनैंयहीअताम्रात
वालगीनहीमीलैप्रमतमासहवी

नग्प्राता मुक्तीगाहीना [illegible] तगुरासीयारहो
कहीहीन [illegible] सवघनीतजव [illegible] लसांपवे
सताग रमालीनीजाघराहीसीवे ग्रेसा
मताजाहीयरहो [illegible] हंसाहीरवाराकहीऐ
सो [illegible] तीनाकाजानोहमहीसुनाउ हमही
उन्हका [illegible] नहीकछुनहीहराउ यर्महास
महु [illegible] जो ग्यानाय्होतेहंसहोईनीरावीना
जकाग [illegible] तामाग्यानाप्रगसा [illegible] याहीकवीरावो
हु [illegible] माद्यासा [illegible] ग्रतमेरामहेवीजीनपावा
ग्रपुग्रपासवघावसमाई जहहेमैताहग्रा
पसमन ब्रंमहो [illegible] ग्रनी सोहंसो
हंसतीकवीर सहमंताहैप्रगटसरीर यह
ग्रंथामेमंतसुनाया [illegible] वेदकोमुलवातया
[illegible] कराहीवीचारा प्रगटब्रंम
[illegible] ग्रेसाग्यानजवाउ
[illegible] ग्यानप [illegible]
पजे [illegible] मसुनाजहोयर्महासा प्रघटब्रंम

सरुपहै ऐकनामवीस्वासा ऐहीग्रंथ
जोसुनैसुनवै गहचैप्रेमाग मीकोपावै जो
ग्यानीहोइ ग्यानवा नीहचैहोइ ब्रह्मसम
ना चरीपहाराथकोफलाहोई नीचैजानो
याहामतसोई ऐसाग्यानग्रावैजीतामरी ग्र
यारामुलमेकहोवीचारी ग्रवमुलानी
जाग्रथहैसाकालाग्यानाभंडारा सुनताग्रवप
हपवहीकिहैकवीरवीचारी धर्मदासो
वचन धर्मदासहीग्रामेग्रतीहरावै गहागध
गीरानरैनानाजालावारावै सतगुरचरनग
हैहीयामाहीमनउहेपंगजावीगासही मोह
नसाम्राकुलग्रतीभारी तमहसोयताणहीस
मरी गुरहायलामोलीमैजागई ग्रवागवनारा
हीताघरापई ग्रवसंहेहराहीकुछनही सद
तुम्हारायसोहीयामही ग्रसतुतीकवनीरेकम
वकीजे ग्रवबीताकाथसवामरीपीजे
ग्रब्रह्मीब्रह्मग्रपरासातगुरा जीयाप्रार
नाग्रऐ कहीकहासकलाजमको ग्रमरा

[illegible] चारेउ मोसीयाकाछनकारलामगर
पराकहनालहो [illegible] पुक्तापगोपहाजनीसौ
ई परायर्मनाकारहीरेउ [illegible] टीनोमे
हीवातइ परामताम्रतमासकला अव
रामुलासमुजाई अवरावास्तुगड ।घ्नौ
एतेश्रीग्रंथा अमरामुला चमहरौ
स[illegible]यनो वीज्ञानमतावरानो द्वास
मे वीस्रमा१०।।संपुरनं संमातइ८८२
वंसवलसाकोपइलाणोरावरसा[illegible]
कोरं इगी जोपैगुनै वीचरैइस्तकही
देधसके सवसंतनसोवनातीहमरी
घटीवटीअहारालेहौसंनरीण सतमे
हतनकोवंहगीअजवहाससतनामगड
[illegible]
[illegible]
[illegible]